



क. री. म. बा. पू. प. डर  
 म.  
 म.  
 र.  
 ड.  
 पू.  
 ड.  
 प.  
 म. डमि. ड. पू. पू. डवे. डपु.

**समयशुद्धिः**

गुरुः-मार्गशीर्षकृष्ण १ शुधे (ता. ३०।११।८३) पश्चिमास्त  
पौषकृष्ण ७ चन्द्रे (ता. २६।१२।८३) पुर्योधयः ।

शुक्रः—श्रावण शुक्ल ६ रवी ( ता. १४।८।८३ )  
पश्चिमास्तः ।  
भाद्र कृष्ण ६ चन्द्रे ( २९।८।८३ ) पूर्वोदयः ।

राहुः-वर्षारम्भतः आषाढ शुक्ल ३ बुधवासरं ( दि.  
१३।७।८३ ) यावत् मिथुने राहुः धनुषिकेनृश्च ।  
तदन्ते वर्षान्तिं यस्मिन् वृषे राहुः वृश्चिके केतव्यः ।

धाणानयनप्रकारः—

संक्रान्तियातांशकनन्दशेषास्तर्कानिरूपाष्टयुगैः समेताः ।  
तष्टा ग्रहे रोगहृताशभूपस्तेना मृतिश्चेति च पंच बाणाः ।

जगत्सङ्गम् ११२।५१।३६

३ रा.	पं.पं.पु.पु.
४	१
५	२१
६	१०
७ रा.	ने.१के.

जन्मलग्नाजग जातकस्य यदा भवेत् ।  
भष्टमं द्वादशं वापि तदर्थं न शुभावहम् ॥

राजा गुरुः



❀ श्रीगणेशाय नमः ❀



मन्त्री गुरु



आर्द्रा प्रवेशलग्नम् ५।५।२९।२७

५	४	३
२	१	६
७	८	९

विवाहादन्यत्र सप्तमलाकाचकम्

क. रो. मृ. आ. पु. पु. श्ले

[illegible]

भा. इति. उ. १. १. १. १.

मुक्तं प्रोच्यते कान्तिं वाच्यते ॥  
यत्तु मुक्तं वाच्यं प्रोच्यते ॥

श्रीमद्बापूदेवशास्त्रिप्रवर्तितं दृक्सिद्धपञ्चाङ्गम्

श्रीमद्गणपतिदेवशास्त्रप्रवर्द्धितम्

श्री संवत् २०४० धातानामसंवत्सरः । शालिवाहन शकः १९०५ । हिजरी सन् १४०३-१४०४ । फसली  
१३९०-९१ राष्ट्रियशकः १९०५-६ ईस्वी सन् १९८३-८४ । वङ्ग संवत् १३८६-८७ । वीर नि० सं० २५०६-१०

सहायकसंपादकौ—

पं० श्री रामकृष्ण तिवारी, ज्योतिषाचार्यः  
पं० श्री रविशङ्कर भार्गवः, ज्योतिषाचार्यः  
पं० श्री रमेशचरण पाठकः, ज्योतिषाचार्यः (कार्यकारी)

सम्पूर्णान्न संकुतीष्वन्विशालयमुद्रालयः

धृतम् मे गोपाय  
सम्पूरानन्द  
संस्कृत  
विश्वविद्यालय  
वाराणसी

प्रधानसम्पादकः—  
विद्यावारिधिः कृष्णचन्द्र द्विवेदी,  
ज्योतिषविभागाध्यक्षः

सदकः : धनश्याम त्रिपाठ्याय सदनालय व्यवस्थापन

पञ्जाब प्रान्त का पत्ता - विकास विभाग, गान्धी

सम्पत्ति विनिवृत्तियर्थं । मं० सं० १२८ व

पञ्चाङ्ग मुद्रा ३-३०



A black and white photograph of a young girl sitting on a stool. She is wearing a light-colored, patterned dress and a headscarf. She is holding a long, thin stick or staff in her right hand. The background is dark and textured.

जन्म संवत् १९४४ मार्गशीर्षशुक्ल ४ ( ता० ४-१२-१८८७ ई० )  
मृत्यु संवत् २०३० पौषशुक्ल ६ ( ता० ३१-१२-१९७३ ई० )

नत्वा देवं गणपतिं तथाऽथ घवह्यहारिणम् । ध्यात्वाऽथ नामजैर्वैज्जदे भूमिकेयं विलिख्यते ।  
आजकल मकरन्द, ग्रहालाघव आदि प्रसिद्धग्रन्थों से बनाये हुए ग्रह  
ग्रहण इत्यादि ठीक ठीक नहीं मिलते । अतः उन ग्रन्थों से जो पञ्चांग बनाए वह  
ठीक न होगा यह अल्पज्ञ भी जान सकता है । उन दिनों में ग्रामीण लोग भी  
कहते थे कि अब ज्योतिषी लोग पन्ना अशुद्ध बनाते हैं ये सब बातें सुनकर और  
पञ्चाङ्गों की दुर्दशा जानकर परम मुखर ज्योतिषाचार्य श्रीमद बापूदेव शास्त्री  
जी श्री ५ काशीराज आदि अनेक शिष्ट लोगों की अनुमति से संवत् १९३३ से  
प्रतिवर्ष पञ्चाङ्ग बनाने में प्रवृत्त हुए । उनका कैलासवास होने पर उनके शिष्य  
ज्योतिः शास्त्रमार्तण्ड श्री चन्द्रदेव शास्त्री, स्वधर्मधुरन्धर दैवज्ञवाचस्पति श्री  
विनायक शास्त्री वेताल, तथा ज्योतिर्वेदविशारद श्री महादेव शास्त्री घाटे आदि  
गुरुजन, उनके बताये हुए प्रकार से प्रत्येक वर्ष का पञ्चाङ्ग बनाकर श्रीगणपति  
देव शास्त्री जी को समर्पण करे संवत् १९८० तक छपाते रहे । तत्पश्चात् पं० श्री  
गणपति देव शास्त्री जी इसको परिवर्द्धित करके संवत् २०२४ तक छपाते रहे ।  
इसलिए मैं इन महानुभावों का ऋणी हूँ । इस पञ्चाङ्ग के सम्पादनादि कार्य में  
भारतीय नॉटिकल आल्मनाक के भूतपूर्व प्रधान सम्पादक डा० निर्मलचन्द्र  
लहिरी एम० ए०, तथा वर्तमान प्रधान सम्पादक श्री ए० वंशोपाध्याय, तथा  
ग्रीन्विच राजकीय वेधशाला के अधिकारी वर्ग, जो सहायता कर रहे हैं अतः  
इसके लिए उन महानुभावों को हार्दिक धन्यवाद है यह पञ्चाङ्ग का ससित  
इतिहास है ।

अब प्राचीन मतानुसारी पञ्चाङ्गों में स्वीकृत वर्तमान ३६५ दि० १५ घं०  
३१ प० इत्यादि होने से यह वेध सिद्ध वर्ष मान से करीब ८।७ पल अधिक है।  
अर्थात् हमारा प्राचीन आरम्भस्थान प्रति वर्ष करीब २।७ विकला पूर्व की ओर  
विचलित होता है। यदि यही क्रम रहा तो हमारी नक्षत्र प्रधान निरयण गणना  
ही दूषित हो जायेगी। अतः इस आपत्ति को दूर करने के लिए तथा इननुसारता  
को चिरस्थायिनी और अव्यधिकृत रखने के लिए वेध सिद्ध नक्षत्र सौर वर्षमान  
३६५ दि० १५ घं० २२ प० और ५७।७ विप० और वेध सिद्ध वार्षिक अयनराशि  
५०°२७' विकला परिमित स्वीकृत की गई है तथा इस संवत् २०४० के वर्षादि  
में चित्रा नक्षत्र का सायन भोग तथा ६ राशि इनके अन्तर तुल्य अयन  
स्वीकार किये गये हैं। इन अयनांशों को मध्यम अयनांश समझना चाहिए।  
वेधादि के लिए न्यूट्रेशन संस्कार की परमता केवल १८ विकला तक होती  
है। एवं व्यवहार को लिए मध्यम अयनांश के लिए जाते हैं। एवं चित्रानक्षत्र  
गतिमान होने से २८६ ई० से अब तक बृह० कला ५५ विकला पूर्व की ओर  
विचलित हुआ उपलब्ध होता है। अतः इन अयनांशों में कला ५५ विकला  
की वृद्धि करके जो ग्रहों के गणित करने को ऐसे प्रकार में किया गया

हुए ग्रह अपने-अपने स्थानों' प्रतिदिन देख पड़ते हैं, जहाँ सूक्ष्म प्रकारों' से सिद्ध किये हुए सूर्य आदि ग्रहों से तिथि, नक्षत्र आदि और निरयण ग्रह सब बहुत परिश्रम से सिद्ध करके इसमें लिखे गये हैं। प्रत्येक कृष्णपक्ष में चन्द्र का उदयकाल और शुक्लपक्ष में अस्तकाल, महापान्त और प्रतिदिन के सूर्य के स्टेण्डर्ड मान से उदय और अस्त के काल, रविक्रान्ति, ग्रहों के भाग और शुक्रादि पांच ग्रहों के उदय अस्त भी लिखे गये हैं। एवं प्रत्येक मास के शुक्ल पक्ष में प्रथम चन्द्रदर्शन का उल्लेख किया गया है। काशी में निरयण लग्न जानने के लिए एक सूक्ष्म लग्न सारणी, निरयण दशमभाद जानने के लिए दूसरी दशल लग्न सारणी, ऐसे ही इस पञ्चाङ्ग में तिथि, नक्षत्र आदि की घटी यद्यपि सब काशी के स्टेण्डर्ड सूर्योदय से ठहराकर लिखी हैं तथापि उनसे जिस किसी नगर के अधांश और देशान्तर जात हों, वहाँ के स्टेण्डर्ड सूर्योदय से भी उन तिथि आदि के घटीपल तुरन्त सिद्ध हो सकते हैं, इसी काम के लिए तीसरी देशांतर सारणी और चौथी चरांतर सारणी, ऐसे चार सारणी श्री ६ वापूदेव शास्त्री जी की बनाई हुई ही इसमें लिखी गई हैं। तीसरी सारणी में भारतवर्ष में प्रायः जितने प्रसिद्ध नगर हैं—उनके अधांश, पलभा पलकण और भूमि की मध्य रेखा जो लङ्का, उज्जयिनी और कुरुक्षेत्र आदि नगरों पर से गई हुई मानते हैं यहाँ से और श्री काशी से भी प्रत्येक नगर की देशान्तर घटी और काशी से वे नगर तथा उन नगरों से काशी जिस दिशा में है उनके दिग्दर्श ठीक ठीक ठहरा कर लिखे हैं। चौथी सारणी में श्री काशी के चरकालों के अन्तर दिखलाये गये हैं। इस प्रकार से यहाँ का एक ही पञ्चाङ्ग सब नगरों में काम दे सकता है इसलिए एक दो नगरों के उदाहरण भी दिखलाये गए हैं। इसमें शुक्र आदि ग्रहों के सूर्य के पास होने से जो उदय और अस्त के काल लिखे गये हैं वे सब पूर्व आचार्यों ने जो कालांश कल्पना किये हैं उनसे ही कालांश मात्राकर सूक्ष्म ग्रहगणित के प्रकार से सूर्य और ग्रह का अन्तर जानकर ठीक-ठीक ठहराये गए हैं। इन विम्बों का आकाश में दिखलाई देना यह उस काल में जैसा आकाश स्वच्छ या मलिन हो, उसके अनुसार होता है। इसलिए उन ठहराये हुए उदय-यास्त कालों में कदाचित् कुछ अन्तर भी हो, तो वह सिद्धान्त के जानकार जो बड़े-बड़े पण्डित गणक हैं, उनके आगे स्पष्ट है इस पञ्चाङ्ग का तिथ्यादि गणित ऐसे ह्दयम प्रकार से किया है, जिससे वेध सिद्ध तिथि और इस पञ्चाङ्ग की तिथि में कहीं-कहीं एक या दो मिमट से अधिक अन्तर कभी न रह सकेगा। एवं इस पञ्चाङ्ग में लोगों के आग्रह से हर्षल और नेत्रच्युत इन दो नवीन ग्रहों के सहित जो दैनिक चन्द्रादि ग्रह स्टै. टा. प्रातः घं. ५ मि. २६.४ के समय के सिद्ध कर लिखे हैं, उनसे और वेध सिद्ध ग्रहों में भी कहीं-कहीं एक कला से अधिक अन्तर न रहेगा। केवल न्यूटो ग्रह की स्पष्ट निरयण भोगांश आठ दिन के अन्तर से लिखे गये हैं। एवं पञ्चाङ्ग में ग्रहों के वक्र मार्ग के दिनों का निम्नय उनके भोगांश पर से ही किया गया है विगुवांशों पर से नहीं। इस पञ्चाङ्ग में काशी की निर्णायक काल का दैनिक साम्यात्मिक काल तथा दैनिक औदयिक स्पष्ट सूर्य भी लिखा गया है। एवं पञ्चाङ्ग में चन्द्र के राशिप्रवेश काल लिखे हैं राशि समाप्ति काल तथा गृहनिर्माणोपयोगी सिद्ध पिण्डसारणी आदि

इस पञ्चाङ्ग के आरम्भ से ही काशी के उच्चकोटि के विद्वानों ने इसकी मौलिकता तथा धार्मिकता को स्वीकार किया है, जो निम्नलिखित है—

यस्मिन् पक्षे यत्राले येन दृग्गणितैरप्यम  
दृश्यते तेन पक्षेण कुर्वन्तिभ्यादिभिर्वाप्य  
संसाध्य साधुतरं बीजं नृसिद्धिर्विचिन्त्य  
तत्संस्कृतप्रदेश्यः कर्तव्यः तिस्रोपादेशो

इति ब्रह्मसिद्धप्रभृतिवचनेभ्यो ह्यप्यत्रैकं यत् प्रकरणे स्थात् तेन  
प्रकरणे सिद्धैस्तिथ्यादिनिर्देशधर्मनिर्देशादिकं कर्तव्यं स्यात् तदप्यत्रिद्वान्तकार-  
मन्यादिसम्मतं तथा च तेन प्रकरणे अपि च सिद्धिप्रकरणे मान्यमिति ।

महम्मदरायमहममः सम्मतिरय अयमय अयतिरय, इति सम्मतिरय  
द्विवेद पण्डित वन्तीराम सभाः सम्मतिरय राममहममः, रायमहममः  
भवानीप्रसादनमः, रायमहममः सिद्धिन्तरयमः, सम्मतिरय नारायणदेव  
शालिणः, सम्मतिरय अयतिरय राममहममः, रायमहममः, महामहोपाध्याय  
पं० सुधाकरमहममः, भवानीप्रसादनमः, पण्डित वेणीशकरमहममः  
रानडेमहममः रायमहममः, सम्मतिरय अयमय अयतिरय मी. जाई. ई.  
महामहोपाध्याय पं० जाई. ई. शालिणः ।

अब यह वृत्ति करने में परम हर्ष है कि वाराणसीय श्री गोपाल मन्दिर संस्थान वरुण सम्प्रदाय के आचार्य स्व० गोधामो श्री १०८ मुरलीधरजी महाराज ने अपने सम्प्रदाय के अतीसकारिक के निर्णयानुसार एकसिद्ध पञ्चाङ्ग को मान्यता प्रदान की है। जिसके लिए उन्हें हार्दिक धन्यवाद है। अन्त में निवेदन है कि श्री पं. म. स्व. भास्वी जी ने ४५ वर्ष तक राज्य सरकार की सेवा की तथा श्री पं. म. स्व. भास्वीदेव भास्वी ने भी अपने जीवन के २९ वर्ष सरकारी सेवा में ही व्यतीत किए थे। अतः उन्हें यह उन्हें यह प्रतीत हुआ कि हमारी बौद्धिक सेवायें राज्य सरकार को ही समर्पित की जायें। इस विधायक से तथा अपनी बुद्धयुक्त्या के कारण श्रीगणपतिदेव भास्वी जी की यह प्रबल इच्छा हुई कि मेरे पूज्य गुरुवरण का यह पञ्चाङ्ग उनकी प्रशंसित पद्धत्यानुसार अनवर अविच्छेद रूप से चलता रहे। उन्होंने अपनी इच्छा अपने मित्र स्व० महामहोपाध्याय पण्डित नारायण शास्त्री खिस्ते, भूतपूर्व प्रिंसिपल राजकीय संस्कृत महाविद्यालय वाराणसी से प्रकट की कि



यह पञ्चांग उत्तर प्रदेश राज्य सरकार ले ले जिससे अविच्छिन्न रूप से प्रकाशित होता रहे। स्व० महामहोपाध्यायों के सतत प्रयत्न से माननीय श्रीमान् भूतपूर्व शिक्षामन्त्री तथा भूतपूर्व मुख्यमन्त्री एवं राजस्थान के भूतपूर्व राज्यपाल श्रेष्ठ स्व० डा० श्री सम्पूर्णानन्द महोदय (जिनका संस्कृत विद्या से बहुत ही प्रेम था और जो मौलिक बातों की रक्षा के लिए सदा प्रयत्नशील रहते थे) की प्रेरणा से राज्य सरकार ने इसे राजाज्ञा संख्या ए १०५३/१५-२०३५-५० दिनांक मई २३, १९५१ द्वारा स्वीकार कर लिया और इसकी रजिस्ट्री दिनांक ४ जुलाई १९५१ ई० को भूतपूर्व प्रिंसिपल स्व० श्री त्रिभुवनप्रसाद उपाध्याय एम. ए. व्याकरणार्थी द्वारा करा ली गयी। अतः अब यह पञ्चाङ्ग उत्तर प्रदेश राज्य सरकार का हो गया। २१ मार्च १९५८ ई० को वाराणसीय राजकीय संस्कृत महाविद्यालय का वाराणसीय संस्कृत विश्वविद्यालय में परिवर्तन होने से संवत् २०४० का यह पञ्चाङ्ग सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित हो रहा है। इस दृष्टिकोणानुसार पंचांग के प्रवर्तक महामहोपाध्याय श्री वापु-देव शास्त्री जी. आई. ई. थे और श्रीगणपति देवशास्त्री जी के वृद्धावस्था के कारण जगमिपु इस पंचांग का पुनरुद्धार श्रेष्ठ स्व० श्री सम्पूर्णानन्द जी ने किया है, अतः वे इस पंचांग के समुद्धारक हैं। जब तक श्री शास्त्री जी कार्य करने में समर्थ रहे अपने सहयोगियों की मदद से इस पंचांग का सम्पादन करते रहे। तत्पश्चात् यह पञ्चाङ्ग सह सम्पादकों द्वारा ज्यो. विभागाध्यक्ष के निर्देशन में सम्पादित हो रहा है, पञ्चाङ्ग में जो त्रुटि होगी उसे विद्वज्जन क्षमा करें। गच्छतः स्वल्पं क्वापि भवत्येव प्रमादतः। हस्त्यज्जनास्तत्र समादधति साधवः ॥ इति ॥

श्री गणेशाय नमः। स जयति सिन्दुरवदनो देवो यसादपङ्कजस्मरणम्। वासरमणिरिव तमसां राशिं नाशयति विघ्नानाम् ॥ १ ॥ प्राप्ते नूतनवत्सरे प्रतिगृहं कुर्यात् ध्वजारोपणं स्नानं भङ्गलमाचरेद्द्विजवरैः सादं सुपूजोत्सवम्। देवानां गुह्योपिता च शिष्योर्ज्जाकस्वस्त्रादिभिः सपूजोपगच्छः फलं च शृणुयात्सम्पन्नं लाभप्रदम् ॥ २ ॥ पारिमदस्य पत्राणि कोमलानि विग्रेषतः सपुण्याणि समानीय चूर्णं कृत्वा विघ्नानतः ॥ ३ ॥ मरीचिहिङ्गलवणं जोरकं च संयुतम्। अजमोदायुतं कृत्वा भक्षयेद्गोशान्ते ॥ ४ ॥ पञ्चाङ्गस्थं गणेशं द्विजगणकयुतं पूजयित्वापित्रुन् सन्तोषानेकदानैः परममुत्तुं भोजयित्वाभिमृष्टम्। शृण्वन् गीतानि वाद्यानि च विविधकथास्तद्दिनं संक्रमेत् क्रीडशीभिश्च सादं ल्हननिशि निरो यावद्वर्द्धं सुखी स्यात् ॥ ५ ॥ राज्यं स्यादचलं नृपश्रवणतो मन्त्रीश्रवात्कीर्णल धान्येशात्मकमला स्थिरा च सुरसा वाणी भवेन्मेषपात्। यमं बुद्धिरतिस्थिरा रसपतेदीर्घायुतातिभवेत्। सत्येसाद्धिमला मतिः शुभकरी राजाजितः श्रूयताम् ॥ ६ ॥ चैत्रे पुण्यमये वसन्तसमये नयं फलं वार्षिकं नित्यं यः शृणुयाद-घोषदलनं चायुयशः श्रीकरम्। वेद्या विष्णुहरी रवीन्द्रविजनाः सीम्यो गुरुर्भागवो मन्दोष्णः सगिबी च शत्रुदलनं कुर्वन् सर्वं ग्रहाः ॥ ७ ॥ ये चैत्रशुक्लप्रतिपत्तिथी फलं शृण्वन्ति भवत्या प्रतिवार्षिकं नराः। ते दुःख दारिद्र्यरुजादिविजिता नन्दन्ति लोके धनधान्यसंबुलाः ॥ ८ ॥ आरोग्यं सविता तनोतु भवतामिन्दुर्यशो निर्मलं

भूति भूमिसुतः सुधाशुतनयः प्रजां गृहगौरवम्। काव्यः कीमलवाग्विलासमतुलं मन्दो मुदं सर्वदा राहुवहिवलं विरोधशमनं केतुः कुलस्थोन्नतिम् ॥ ९ ॥ राज्यं यादचलं तिथिश्रवणतो वारात्तथायुश्रिर नक्षत्रं कृतपापः चयहरं योगाः वियोगा-पहाः। सर्वाभीष्टकरं तथैव करणं पञ्चाङ्गमेवं स्फुटं श्रोतव्यं गणकाननात् प्रतिदिनं श्रेयस्करं सिद्धिदम् ॥ १० ॥ अथ विश्वशुभः कमलैर्द्रव्यं द्वितीयं पराधं श्वेत-वाराहकृत्ये वैवरवतमन्वन्तरेष्टाविशतितमे महाभुगे कलिपुण्यस्य रक्षाया आदितः शालिवाहनशकारम्भकालायन्ते मितानि सौरवर्षाभ्यतीतानि। ततो वर्तमानवत्स-वत्सरम्भकालपर्यन्तं पञ्चाङ्गिक एकोनविंशतिशत साक १०५ मितानि सौरवर्षाभ्य-तीतानि। अमुं वर्तमानवत्सरं नमोदाया उत्तरेभागे धातानाम्ना व्यवहरन्ति दक्षिण-भागे च ईश्वर नाम्ना व्यवहरन्ति। अस्मिन् वर्षे राजा गृहः। मंत्री गृहः। पूर्वधान्येशो शनिः। मेषेशो बुधः। पश्चिमधान्येशो शुकः। रसेशो चन्द्रः। संवत्सरफलम्—युद्धकर्मणिरताः पुष्टीशाः सुखानोपतिरकृताभिनवेशाः। धेनु पुनर्मति दुग्धसमेतं वर्षणात्फलकणदि तिताम्तम्। यशकर्मणि सतामनुरागः पायवे सुरगुरो न च रोगः ॥ अन्तर्गताः पायोदरा भूरि दिशति पाथो धानो कणो वर्जनमुद्दिधात्री। पुष्टी पुष्टी पुष्टी मंत्री यदा स्यात्सुरराज-मंत्री। अथपूर्वधान्येशफलम्—धान्योपायः कोशहानिर्नृपाणां मन्त्रावृष्टिः स्वाज्ज-यस्तस्कराणाम्। रोगाद्वन्धैश्चाति पीडा जनस्य प्राधान्येशेचसुतोभास्करस्या। अथमेषेशफलम्—वचिदामयेन विकलं नृकुलं लिपि काव्य विदगणकबुद्धिरलं ॥ जलवृष्टिः सकलधान्य भूतिः शशिनन्दनो यदि पयोदपतिः ॥ अथपश्चिम धान्येशफलम्—क्षिति सुरामख कर्मणि तत्परा बहुलमुत्तितान्त कणाधरा। तद्यु सफलपुष्प समुद्रव चरमधान्य पतिर्योद भागवः ॥ अथरसेशफलम्—प्रचुरमैश्वर्यतैल्यवादिक् मखकरं क्षिति देव कदम्बकम्। दिशति दुग्धमतीव गवान्तर्तिर्यदिरसाधिपति रजनीपतिः ॥ अथाद्राप्रवेशः—ज्येष्ठमासे शुक्लपक्षे द्वादश्यां २३/१५ परं त्रयोदश्यां तिथी बुधवासरे विषात्मानक्षत्रे सिद्धिर्भोगे कोलवकरणे अरिमन्दिने मातृण्ड माण्डलाद्यदिवात् १६/८ एतावत्सावयवपटी-मिते काले दिवा खेराद्राप्रवेशः तवादी—अथतिथिफलम्—विवाकरस्य रौद्रमे प्रवेशने त्रयोदशी तिथिर्यदिस्थिततदा पतेदनर्गलं जलम्। अथवारफलम्—बुधस्ववारारे रौद्रं विष्णोः भातुः प्रयाति चेत् तर्हि ब्राह्मणजातिनां कल्याणाय मितानि च ॥ अयनक्षत्रफलम्—विशाखा यदि चाध्वाधं भातोरार्द्राप्रवेशने। तदा निखिल रोगाणां विनाशो जायतेध्रुवम्। अथयोगफलम्—सिद्धि योगे सहस्रांशी शिवनक्षत्रं यापिनि। कर्मणां हि तदाऽप्यन्तं सिद्धिः सस्यादिकं बहुः। अथबेलाफलम्—पार्वती रमणिभं दिवा यदा स्याद्विवाकरसमन्वितं तदा। जायते वसुमती कर्णोनिता तस्करादिकप्रयं जलात्पता ॥ अस्मिन्वर्षेपुष्कर-नामामेषः नैव कर्मलविवृद्धिर्जायते विविध पातक वृद्धिः। रोगतो जनकृशाल-मनस्य पुष्करे जलधरे जलमल्पम्। अस्मिन्वर्षे वज्रदंष्ट्रनाश नागस्तत्फलम्—यथ संवत्सरे नागो वज्रदंष्ट्राभिधानकः। तदाम्बुवर्षणं नैव सर्वं सस्यविनाशनम्। अस्मिन्वर्षे रोहिणी नक्षत्रं तटोपतितं तत्फलम्—यदिविधिधिष्ण्यं भवति तदस्थं। बहुजल वृष्टिः धनकृष्ण वृद्धिः ॥

अथ देशपरत्वेन राजादिकफल्यवस्था—पाञ्चालसौराष्ट्रविदर्भदेशेषु राज-फलम्। पौष्कलिकङ्गयोर्मन्त्रिकफलम्। गुजरेयावनयोः सस्येशफलम्। मगधदेशे मेषेशफलम्। कोंकणमालवयोः रसेशफलम्। विन्ध्यदिदक्षिणभागे आर्द्रा प्रवेशफलम्। अथविशोपकाः—वृष्टिः ११ धान्यम् १५ तृणम् १३ शीतम् १७ उष्णम् ५ वायुः १३ वृद्धिः १५ विनाशः १५ विप्रदुः १३ क्षुत् ६ तृष्णा ११ निद्रा १३ आलस्यम् ५ उद्यमः ७ शान्तिः ११ क्रोधः ३ दण्डः ३ भेदः १ मत्री ३ रसनिष्पत्तिः ७ फलनिष्पत्तिः ११ उत्साहः १ शलमाः १५ शुकाः १९ मूषकाः ७ अतिवृष्टिः ५ अनावृष्टिः ६ स्वचक्रम् १० परचक्रम् १५ परचक्रनाशः १३ रत्नाति १७ वस्त्राणि ११ वृत्तम् ७ तैलम् १० दुग्धम् १० उर्णाविस्त्राणि ११ क्षौमाणि ३ वल्कलम् १५ भूर्जपत्रम् १६ सुवर्णम् १३ ताम्रम् ७ वंगम् ५ रौप्यम् १७ लोहम् १५ खपरिसूत्रम् ५ पित्तलम् ९ नागः १३ घोषकम् १७ उग्रप्रकृतिः ९ सौम्यप्रकृतिः १९ पापप्रकृतिः १९ पुण्यप्रकृतिः ५ व्याधिः १३ भेषजम् ७ आचार ७ अनाचाः १७ मरणम् ७ जननम् ९ देशोपद्रवः १३ देशस्वास्थ्यम् १५ चौरभेतिः ५ चौरनाशः १७ अग्नि-भीतिः १९ अग्निनाशः ११ विपभीतिः १५ विषशमः ३ सेवकत्वम् ५ स्वामित्वम् १६ निबन्धनम् ११ परधनम् १५ क्षुत् १५ पुंश्वलीकर्म ११ जारणम् ३ जारण-नाशः ९ मारणम् १३ मारणनाशः १५ स्तम्भनम् १५ स्तम्भननाशः १३ मोहनम् ९ मोहननाशः ३ उच्चवाटनम् १३ उच्चवाटननाशः ५ वशीकरणम् १३ वशीकर-नाशः ३ वातप्रकृतिः ९ पित्तप्रकृतिः १५ कफप्रकृतिः ३ हृन्धप्रकृतिः ७ सन्निपातः ११ यशः १५ अपयशः १९ गर्वः ५ उग्रता ७ प्रपञ्चः ६ भूतबाधाः ११ भूतनाशः १३ ग्रहदोषः १५ ग्रहदोषनाशः १७ अण्डजः ११ जारजाः ५ स्वेदजाः ६ उद्भिजाः १३ पुण्यम् २ पापम् २८ सर्वनिष्पत्तिः ११ इति विशोपकाः ॥ इतीदं वत्सरफलं वत्सरादितियो शुभम्। यः शृणोति नरो भक्त्या स सुखी वत्सरे भवेत् ॥ १ ॥ श्री गणेशाय नमः। अथ श्री शुभ संवत् २०४० शके १९०१ अस्मि-न्वर्षे वर्षाभ्यन्तरं प्रथमदिवसे मे पसकान्तिः। आवणशुक्ल ३ गुल्वास-रतः भाद्रपदकृष्ण ९ गुल्वासरपर्यान्तं भृगोर्वर्षावशात्, वाल्यानि। मार्गशीर्षकृष्ण ९ रविवासरतः पौषकृष्ण १० गुल्वासर पर्यन्तं गुरोर्वर्षावशात्वाल्यानि। मार्गशीर्ष शुक्ल ११ गुल्वासरतः पौषशुक्ल ११ शनिवासर-पर्यन्तं धनुर्मासः। फाल्गुनशुक्ल १२ बुध-वासरतः वर्षा तं यावत्मीनाकः। अतोनिधि समयं विहाय शुद्धाः सदाशुभं भूतार्ताः लिखन्ते। रोगाणां विवेचनं सुविधः भूयन्तु ॥

अथ विवाहसूत्राः चैत्रशुक्लपक्षे ३ शनी २१/८ उ. रोहिणी भं. शुद्धम्। ४०/४८ उ. भद्राव्यातिः। १०/१२ या. मृ. वा. व्या. विष्टेः पूर्व मृ. वा. परं दिवा सिंहे इ. ४। गोबुलिः। रात्रौ पञ्चेशलना-भावः। रात्रौ १०/५ या. रोहि. भं. शुद्धम्। ८/८ या. भद्रा व्यातिः। विष्टेः परं पञ्चेशलनाभावः १०/५ उ.। मृग. भं. राहुभुक्तम्। ५ चन्द्रे १०/३५ या. मृग. भं. पूर्व दोष युक्तम्। १० शुके ११/२८ उ. मघा भं. शुद्धम्। सिंहे इ. ५। गोबुलिः। कुंभे इ. ५। ७ चन्द्रे १। ३५ या. उ. फा. भं. सूर्यवेधावसानं नेन्दु युक्तम्। १२ रात्रौ ५/१० या. उ. फा. भं. पूर्व दोष युक्तम्। २२/१० उ. मृ. वा. व्यातिः। १३ चन्द्रे १०/१० या. शुक्ल वा. शुद्धम्। २३/१० या. मृ. वा. व्यातिः। १४ भोमे १०/१५ उ. स्वाती भं. शनि युक्तम्। १५ कुजे ४/८ या. स्वाती भं. पूर्व दोष युक्तम्। १६ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। १७ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। १८ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। १९ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। २० रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। २१ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। २२ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। २३ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। २४ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। २५ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। २६ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। २७ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। २८ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। २९ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। ३० रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। ३१ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। ३२ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। ३३ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। ३४ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। ३५ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। ३६ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। ३७ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। ३८ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। ३९ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। ४० रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। ४१ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। ४२ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। ४३ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। ४४ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। ४५ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। ४६ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। ४७ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। ४८ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। ४९ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। ५० रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। ५१ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। ५२ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। ५३ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। ५४ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। ५५ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। ५६ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। ५७ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। ५८ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। ५९ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। ६० रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। ६१ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। ६२ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। ६३ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। ६४ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। ६५ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। ६६ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। ६७ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। ६८ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। ६९ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। ७० रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। ७१ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। ७२ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। ७३ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। ७४ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। ७५ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। ७६ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। ७७ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। ७८ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। ७९ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। ८० रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। ८१ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। ८२ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। ८३ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। ८४ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। ८५ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। ८६ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। ८७ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। ८८ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। ८९ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। ९० रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। ९१ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। ९२ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। ९३ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। ९४ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। ९५ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। ९६ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। ९७ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। ९८ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। ९९ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। १०० रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। १०१ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। १०२ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। १०३ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। १०४ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। १०५ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। १०६ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। १०७ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। १०८ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। १०९ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। ११० रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। १११ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। ११२ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। ११३ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। ११४ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। ११५ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। ११६ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। ११७ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। ११८ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। ११९ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। १२० रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। १२१ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। १२२ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। १२३ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। १२४ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। १२५ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। १२६ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। १२७ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। १२८ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। १२९ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। १३० रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। १३१ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। १३२ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। १३३ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। १३४ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। १३५ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। १३६ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। १३७ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। १३८ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। १३९ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। १४० रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। १४१ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। १४२ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। १४३ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। १४४ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। १४५ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। १४६ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। १४७ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। १४८ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। १४९ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। १५० रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। १५१ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। १५२ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। १५३ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। १५४ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। १५५ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। १५६ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। १५७ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। १५८ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। १५९ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। १६० रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। १६१ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। १६२ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। १६३ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। १६४ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। १६५ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। १६६ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। १६७ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। १६८ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। १६९ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। १७० रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। १७१ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। १७२ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। १७३ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। १७४ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। १७५ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। १७६ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। १७७ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। १७८ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। १७९ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। १८० रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। १८१ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। १८२ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। १८३ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। १८४ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। १८५ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। १८६ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। १८७ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। १८८ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। १८९ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। १९० रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। १९१ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। १९२ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। १९३ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। १९४ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। १९५ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। १९६ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। १९७ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। १९८ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। १९९ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। २०० रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। २०१ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। २०२ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। २०३ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। २०४ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। २०५ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। २०६ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। २०७ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। २०८ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। २०९ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। २१० रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। २११ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। २१२ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। २१३ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। २१४ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। २१५ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। २१६ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। २१७ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। २१८ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। २१९ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। २२० रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। २२१ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। २२२ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। २२३ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष युक्तम्। २२४ रात्रौ १०/१० या. रोहिणी भं. पूर्व दोष यु



८ शुक्र १५२० या. मघा मं शुद्धम् । पञ्चेष्टलम्नाभावः ।  
 १० शनी ११३५ उ. उ. फा. मं शुद्धम् । दिवा कर्क  
 इ. ६ । गोधूलिः । मीने इ. ६ । ७ चं ।  
 ११ रवी ११३० या. उ. फा. मं परं हस्त मं शुद्धम् ।  
 दिवा कर्क इ. ६ । २३३३ उ. म. व्या. । भद्रोपरान्त  
 मीने इ. ६ । ७ चं ।  
 १२ चन्द्रे ११२० या. ह. मं शुद्धम् । पञ्चेष्टलम्नाभावः ।  
 १३ भीमे १११५ या. व्यतीपात व्याप्तिः । व्यतीपातात्  
 परं स्वाती मं शनि युतम् ।  
 १४ बुधे ११०३ या. स्वाती मं पूर्वदोष युक्तम् ।  
 १५ गुरो १०८ उ. अनु. मं शुद्धम् । १०१४ या. भद्रा  
 व्याप्तिः । २०१८ या. मृ. वा परं गोधूलिः । मीने इ. ६ ।  
**ज्येष्ठकृष्णपक्षे**  
 १ शुक्र ११३८ या. अनु. मं शुद्धम् । पञ्चेष्टलम्नाभावः ।  
 २ शनी १०१२ उ. मूल केतु युतिः ।  
 ३ रवी २१५३ या. मूल पूर्वदोषः । २५१२८ उ. भद्रा ।  
 ४ चन्द्रे २१२३ उ. उ. फा. मं राहु विद्धम् ।  
 ५ भीमे ३६१८ या. उ. फा. मं पूर्वदोष युक्तम् ।  
 ६ रवी ३६३५ उ. उ. फा. मं शुद्धम् । दिवा पञ्चेष्ट-  
 लम्नाभावः । गोधूलिः । मुग्मे इ. ६ । ६ शु. ।  
 मीने ३५ । १ चं ।  
 १० चन्द्रे ०५ उ. ३०३८ या. भद्रा व्याप्तिः । भद्रो-  
 परान्त रेवती मं शुद्धम् । गोधूलिः । मीने इ. ६ ।  
 ११ भीमे ११३० या. रेवती मं शुद्धम् । पञ्चेष्टलम्नाभावः ।  
**ज्येष्ठशुक्लपक्षे**  
 ५ बुधे ३३३० उ. मघा मं शुद्धम् । गोधूलिः । राती  
 पञ्चेष्टलम्नाभावः ।  
 ६ गुरो २३३५ या. मघा मं शुद्धम् । २३३४ या. मृ.  
 वा. परं कर्क इ. ६ । १ शु. ।  
 ७ शुक्र २५३३ उ. उ. फा. मं शुद्धम् । २२३८ उ.  
 ५०१८ या. भद्रा व्याप्तिः । भद्रोपरान्त मीने इ. ५ ।  
 ८ शनी २३१० या. उ. फा. मं शुद्धम् । ३८२३ या  
 व्य. । परं हस्त मं शुद्धम् । मीने इ. ५ ।  
 ९ रवी २३०५ या. हस्त मं शुद्धम् । दिवा कर्क इ. ६ । १ शु.  
 १० चन्द्रे २३१८ उ. स्वाती मं शुद्धम् । गोधूलिः ।  
 २२१४ उ. भद्रा व्याप्तिः ।  
 ११ भीमे २३३३ या. स्वाती मं शुद्धम् । १२३५ या.  
 म. व्याप्तिः । भद्रोपरान्त पञ्चेष्टलम्नाभावः ।  
 १२ बुधे २३१० उ. अनु. मं शुद्धम् । गोधूलिः । मकरे इ. ५ ।

१३ गुरो २१५८ या. अनु. मं शुद्धम् । दिवा सिंहे  
 इ. ६ । १२ शु. ।  
 १४ शुक्र ३१४५ उ. मूल मं केतु युतम् ।  
 १५ शनी १०३५ या. मूल मं पूर्वदोष युक्तम् ।  
**आषाढकृष्णपक्षे**  
 २ चन्द्रे ५४२० या. उ. फा. मं सूर्यवेधावसानं नेन्दु-  
 भुक्तमशुभम् ।  
 ७ शनी २२१३ उ. उ. फा. मं शुद्धम् । २०५२ या.  
 भद्रा व्याप्तिः । भद्रोपरान्त गोधूलिः । मकरे इ. ६ ।  
 ८ शु. । मेपे इ. ५ । ७ शु. ८ गु. ।  
 ८ रवी २०४३ या. उ. फा. मं शुद्धं परं रेवती मं शुद्धम् ।  
 दिवा सिंहे इ. ५ । गोधूलिः । मकरे इ. ६ । ८ शु.  
 चं । मेपे इ. ५ । ७ शु. ८ गु. ।  
 ८ चन्द्रे ३११० या. रेवती मं शुद्धम् । दिवा सिंहे  
 इ. ७ । ८ चं ।  
 १२ गुरो ३०३२ उ. रोहिणी मं शुद्धम् । गोधूलिः ।  
 मकरे इ. ५ । ८ शु. । अग्रे मासान्तादि दोषः ।  
**आषाढशुक्लपक्षे**  
 ३ बुधे ४०५५ या. मघा मं शुद्धम् । २०३५ उ.  
 व्यतीपातः । २१५३ उ. भद्रा व्याप्तिः । व्यतीपात-  
 त्परं भद्रायाक् दिवा सिंहे इ. ५ । १२ चं । १२ शु. ।  
 ५ गुरो ४१४३ उ. उ. फा. मं शुद्धम् । ३८४९ उ. मृ.  
 वा पञ्चेष्टलम्नाभावश्च ।  
 ६ शुक्र ३८४८ या. उ. फा. मं शुद्धम् । ४१४२ या.  
 मृ. वा परं हस्तं लग्नं चिन्त्यम् ।  
 ७ शनी ३६१२ या. हस्त मं शुद्धम् । दिवा सिंहे इ.  
 ५ । १२ शु. । गोधूलिः । ३९० उ. भद्रा व्याप्तिः ।  
 अतः परं हरिश्चयनत्वात् विवाह मुहूर्ता भावः ।  
**कार्तिकशुक्लपक्षे**  
 १२ गुरो ५३१० या. रेवती मं भीमविद्धम् ।  
 १५ रवी ५५५३ उ. रोहिणी मं राहु युतम् ।  
**मार्गशीर्षकृष्णपक्षे**  
 १ चन्द्रे ५४२३ या. रोहिणी मं राहु युतं परं मृग. मं  
 राहु युक्तं नेन्दु युक्तमशुभम् । ५०५० उ. भद्रा व्याप्तिः ।  
 २ भीमे ५२३३ या. मृग. मं पूर्वदोष युक्तम् ।  
 ६ शनी ३८२३ उ. मघा मं शुद्धम् । २६१५ उ. मृ.  
 वा. व्याप्तिः ।  
 अतः परं गुरोस्तादिदोषात् धनुरक्ताच्च विवाह  
 मुहूर्ता भावः ।

**माघकृष्णपक्षे**  
 २ शुक्र १५१५ उ. मघा मं शुद्धम् । गोधूलिः । सिंहे  
 इ. ६ । १२ चं । ४०१९ उ. भद्रा व्याप्तिः ।  
 ३ शनी ८१३५ या. मघा मं शुद्धम् । ५५५० या. भद्रा  
 व्याप्तिः । भद्रोपरान्त पञ्चेष्टलम्नाभावः ।  
 ५ रवी २१२० उ. उ. फा. मं शुद्धम् । दिवा पञ्चेष्ट-  
 लम्नाभावः । गोधूलिः । सिंहे इ. ५ । धनुषि इ.  
 ६ । ४५१३ उ. भद्रा व्याप्तिः ।  
 ७ भीमे ५०४८ उ. स्वाती मं भीमयुतम् ।  
 ८ बुधे ५०१० या. स्वाती मं पूर्वदोष युक्तम् । २२१४  
 या. मृ. वा. व्याप्तिः ।  
 ९ गुरो ५०४८ उ. अनु. मं शुद्धम् । धनुषि इ. ६ । १२ के. ।  
 १० शुक्र ५३१५ या. अनु. मं शुद्धम् । ६१२ उ. ३७८  
 या. म. व्या. परं पञ्चेष्टलम्नाभावः ।  
 ११ शनी ५६३८ उ. मूल मं शुद्धम् । पञ्चेष्टलम्नाभावः ।  
 १२ रवी ६०१० या. मूल मं शुद्धम् । दिवा मीने इ. ५ । ८  
 भी. । गोधूलिः । सिंहे इ. ६ । धनु इ. ५ । १ चं ।  
 १३ चन्द्रे ५१८८ या. मूल मं शुद्धम् । स्वत्यकालः ।  
**माघशुक्लपक्षे**  
 ३ रवी ४१४८ उ. उ. फा. मं शुद्धम् । ८१५ उ.  
 म. व्याप्तिः ।  
 ४ चन्द्रे ४९१५ या. उ. फा. मं शुद्धम् । २१२३ या.  
 भद्रा व्याप्तिः परं गोधूलिः । सिंहे इ. ५ । १२ चं ।  
 ५ भीमे ५५४८ या. रेवती मं शुद्धम् । दिवा मीने इ.  
 ५ । १ चं. ८ मं. । गोधूलिः । सिंहे इ. ५ । १८ चं ।  
 धनुषि इ. ६ । लग्नेशः गुरुः लग्ने ।  
 ९ शनी ८५५ उ. रोहि. मं राहु युतं सूर्यवेधावसानं  
 नेन्दु युक्तम् । ८१२ उ. मृ. वा. ।  
 १० रवी ८३० या. रोहि. मं पूर्वदोष युक्तं परं मृग  
 मं शुद्धम् । ७३१ या. मृ. वा. ३९५५ या. वैवृतिः ।  
 परं धनुषि इ. ६ । १ गु. ७ चं ।  
 १४ गुरो १३४३ उ. मघा मं सूर्य वेधावसानं नेन्दु-  
 भुक्तमशुभम् ।  
**फाल्गुनकृष्णपक्षे**  
 १ शुक्र ४९१३ या. मघा मं सूर्य वेधावसानं नेन्दु-  
 भुक्तमशुभम् ।  
 २ शनी २८५८ उ. उ. फा. मं शुद्धम् । कर्क इ. ५ ।  
 धनुषि इ. ७ । १ गु. ।

३ रवी २१३३ या. उ. फा. मं शुद्धं परं हस्त मं शुद्धम् ।  
 ५१२३ या. भद्रा व्याप्तिः । भद्रोपरान्त गोधूलिः ।  
 कन्यायां इ. ६ । १ चं । धनुषि इ. ७ । १ गु. ।  
 ४ चन्द्रे १०५५ या. हस्त मं शुद्धम् । पञ्चेष्टलम्नाभावः ।  
 ५ भीमे १०३५ उ. स्वाती मं सूर्यविद्धम् । भीम-  
 भुक्तनेन्दु युक्तमशुभम् ।  
 ६ बुधे ७५५ या. स्वाती मं पूर्वदोष युक्तम् ।  
 ७ गुरो ७१३३ उ. अनु. मं शुद्धम् । १५६ उ. मृ. वा.  
 व्याप्तिः ।  
 ९ शनी ११३० उ. मूल मं शुद्धम् । गोधूलिः ।  
 कन्यायां इ. ५ । ६ बुधः ।  
 ११ चन्द्रे २१५३ उ. उ. फा. मं शुद्धम् । ४७१८ या.  
 व्यतीपातः परं धनुषि इ. ८ । १ गु. ।  
 १२ भीमे २८३० या. उ. फा. मं शुद्धम् । दिवा मेपे इ.  
 ५ । ७ रा. भी. ।  
**फाल्गुनशुक्लपक्षे**  
 १ शनी ५७५० उ. उ. फा. मं शुद्धम् । ५१२८ या.  
 मृ. वा. व्याप्तिः ।  
 २ रवी ६०१० या. उ. फा. मं शुद्धम् । कृपे इ. ६ ।  
 १ राहुः, ७ केतुः, ८ गुरुः ।  
 ३ चन्द्रे ५१० या. उ. फा. मं शुद्धं परं रेवती मं शुद्धम् ।  
 दिवा कृपे इ. ५ । १ राहुः, ७ भीमः केतुपञ्च ।  
 गोधूलिः । धनुषि इ. ६ । १ गुरुः ।  
 ३ भीमे ११४३ या. रेवती मं शुद्धम् । दिवा कृपे इ.  
 ५ । १ राहुः, ७ भीमः केतुश्च ।  
 ६ शुक्र २६३० उ. रोहि. मं राहु युतम् ।  
 ७ शनी २८४० या. रोहि. मं पूर्वदोष युक्तं परं मृग.  
 मं शुद्धम् । २०२८ उ. ४५१७ या. भद्रा व्याप्तिः  
 परं मकरे इ. ५ । १२ गु. ।  
 ८ रवी २९१० या. मृग. मं शुद्धम् । दिवा कृपे इ. ५ ।  
 १ राहुः, ७ केतुः भीमश्च । अग्रे पञ्चेष्टलम्नाभावः ।  
 अतः परं मीनाक्तत्वात् विवाह मुहूर्ता भावः ।  
**अथ उपनयन मुहूर्ताः**  
**चैत्रशुक्लपक्षे**  
 १० शुक्र ३१२८ या. आश्लेषायां स्वत्यकालः लग्नाभावश्च ।  
 १२ रवी ५३१८ उ. उ. फा. मं शुद्धम् । सिंहे इ. ६ ।  
 ५ केतुः ।

**वैशाखकृष्णपक्षे**  
 २ शुक्र ५२१५ या. अनु. मं शुद्धम् । सिंहे इ. ५ । ४ केतुः ।  
 ५ चन्द्रे २१२३ या. मूल केतु युतिः परं उ. फा. मं  
 ३६१४ या. रो. वा. व्याप्तिः ।  
**वैशाखशुक्लपक्षे**  
 ३ रवी ३३४८ या. मृग. मं, संक्रान्ति दोषः ।  
 ११ रवी ६१३० या. उ. फा. मं शुद्धं परं हस्त मं शुद्धम् ।  
 २३३३ उ. ५१२८ या. भद्रा व्या. । विष्टः पूर्व  
 सिंहे इ. ५ । १ चन्द्रे ५ केतुपञ्च ।  
 १२ चन्द्रे ८१० या. हस्त मं शुद्धं परं चित्रा मं शनि-  
 युतम् । २२१२ उ. रो. वा. व्याप्तिः पञ्चेष्टलम्नाभावश्च ।  
**ज्येष्ठकृष्णपक्षे**  
 ३ रवी २२५३ या. मूल केतु युतिः ।  
 ५ बुधे ११२३ या. ध्रुवमं शुद्धम् । पञ्चेष्टलम्नाभावः ।  
**ज्येष्ठशुक्लपक्षे**  
 ३ चन्द्रे ४०१२३ या. पुन. मं केतुविद्धम् ।  
 ५ बुधे ३३३० या. आश्लेषायां संक्रान्तिदोष युक्तम् ।  
 १० चन्द्रे २२८ या. चित्रा मं शनि युतं परं स्वाती मं  
 शुद्धम् । लग्नं चिन्त्यम् ।  
**आषाढकृष्णपक्षे**  
 २ चन्द्रे ५४२० या. उ. फा. मं राहुविद्धम् ।  
 ५ गुरो ११२० उ. स्वाती मं शुद्धम् । सिंहे इ. ७ । ५ के.  
 १२ शु. व्याप्यः ।  
**आषाढशुक्लपक्षे**  
 ५ गुरो ४२४३ या. पू. फा. मं शुद्धम् । ११२८ या  
 व्य. पा. दोषः परं पञ्चेष्टलम्नाभावः ।  
**माघकृष्णपक्षे**  
 २ शुक्र १५१३ या. आश्लेषायां शुद्धम् । मीने इ. ६ ।  
 ८ श. मं. अशुभो ।  
 ५ रवी २१२० या. पू. फा. मं परं उ. फा. मं शुद्धम् ।  
 मीने इ. ५ । ६ चन्द्रे ८ मं. श. । मिश्रं इ. ५ ।  
 ५ श. मं. ८ शु. ।  
**माघशुक्लपक्षे**  
 १ शुक्र २१ ८ उ. २६१२ या. धनि. मं शनिविद्धम् ।  
 ३ रवी १५३३ या. पू. फा. मं शुद्धम् । मीने इ. ५ । १० चं.  
 ८ श. मं. ।  
 १० रवी ८३० या. रोहिणी मं राहु युतं परं मृग. मं  
 शुद्धम् । २०५५ या. वैवृतिः ।

**फाल्गुनशुक्लपक्षे**  
 ३ रवी ६१० या. उ. फा. मं शुद्धम् । कृपे  
 इ. ६ । १ रा. ४ गु. । सिंहे इ. ५ ।  
 ८ शु. चं ।  
 ३ चन्द्रे ५१० या. उ. फा. मं परं रेवती  
 मं शुद्धम् । कृपे इ. ६ । १ रा. ८ गु. ।  
 सिंहे इ. ५ । ८ शु. चं ।  
 ९ चन्द्रे १०५५ उ. आश्लेषायां परं पुन.  
 मं शुद्धम् । कृपे इ. ५ । ८ गु. १ रा. ।  
 १२ बुधे २८४३ या. पुन. मं केतुविद्धम् ।  
**अथ चैत्र मुहूर्ताः**  
**चैत्रशुक्लपक्षे**  
 ११ रवी २१२० या. उ. फा. मं परं हस्त मं  
 शुद्धम् । २३३३ उ. म. व्या. । विष्टः  
 पूर्व पञ्चेष्टलम्नाभावः ।  
**ज्येष्ठकृष्णपक्षे**  
 ३ बुधे ३३३० या. अश्लेषायां शुद्धम् ।  
 ५ रा. मं. शि. परं कर्क इ. ६ ।  
 १० चन्द्रे २२८ या. उ. फा. मं परं रेवती-  
 मं शुद्धम् । २२१२ उ. ३०३८ या.  
 म. व्या. ।  
**आषाढकृष्णपक्षे**  
 ५ गुरो ४२४३ या. धनिष्ठायां परं शनि.  
 मं शुद्धम् । सिंहे इ. ६ ।  
**माघशुक्लपक्षे**  
 ३ शुक्र २१२८ उ. २६१२ या. धनिष्ठायां  
 शनिविद्धम् ।  
 ३ रवी ८३० उ. मृग. मं शुद्धम् ।  
 ३९५५ या. वैवृतिः ।  
 ११ चन्द्रे ११२० या. मृग. मं शुद्धम् ।  
 ११४३ उ. भद्रा व्या. । स्वत्य काले  
 पञ्चेष्ट लम्नाभावः ।  
 १२ बुधे ३३३३ या. मघा मं शुद्धम् । कृपे  
 इ. ५ । ८ गु. ।  
**फाल्गुनशुक्लपक्षे**  
 ३ चन्द्रे ५१० उ. रेवती मं शुद्धम् । मिश्रं  
 इ. ५ ।



४ बुधे ६।३३ या. भद्रा व्या.परं पञ्चम्यां १७।३३ या. अश्विनीभं शुद्धम् । मिथुने इ. ५ ।

### अथ द्विरागमनमुहूर्त्ताः

#### चैत्रशुक्लपक्षे

८ बुधे २२।१४ या. म. व्या. परं पुष्यभं शुद्धम् । कन्यायां पंचेष्टलम्नाभावः ।  
१३ चन्द्रे ५।०३८ या. हस्तभं शुद्धम् । १९।१४ उ. भ. व्या. । विष्टेः पूर्वं पञ्चेष्टलम्नाभावः ।

#### वैशाखकृष्णपक्षे

२ शुके ५।२१५ या. अनु. भं भौमविद्धं परं मूलभं कैतुपुतम् ।  
७ बुधे १६।३३ या. उ.पा. भं राहुविद्धं परं ध्रुवणभं शुद्धम् । लग्नं चित्यम् ।  
८ गुरो २।४५ या. ध्रुवण भं परं ४।२३८ या. धनिष्ठाभं शुद्धम् । पञ्चेष्टलम्नाभावः ।

१२ चन्द्रे ४।१३० या. उ.भा.भं शुद्धम् । पञ्चेष्टलम्नाभावः ।

#### मार्गशीर्षकृष्णपक्षे

१ चन्द्रे ५।४२३ या. रोहिणी भं शुद्धम् । वृषे इ. ५ ।  
४ गुरो १।३३५ उ. पुन. भं शुद्धम् । वृषे इ. ५ ।  
५ शुके ४।२५ या. पुष्यभं कैतुविद्धम् ।

#### फाल्गुनकृष्णपक्षे

७ गुरो ६।२३ उ. अनु. भं शुद्धम् । मीने इ. ५ । ८ श. म. । कन्यायां इ. ६ ।  
८ शुके ८।२८ या. अनु. भं शुद्धम् । मीने इ. ५ । ८ श. म. ।  
११ चन्द्रे २।१।३ उ. उ.पा. भं शुद्धम् । ४।०८८ या. व्या. व्याप्तिः परं पञ्चेष्टलम्नाभावः ।

१३ बुधे ३।१३३ या. ध्रुवणभं शुद्धम् । मीने इ. ५ । ८ श. म. ।

#### फाल्गुनशुक्लपक्षे

३ चन्द्रे ५।० उ. रेवतीभं शुद्धम् । मिथुने इ. ५ ।  
४ बुधे १७।४३ या. अश्विनीभं शुद्धम् । ६।५३ या. भ. व्या. परं पञ्चम्यां मिथुने इ. ५ ।

### अथ जलाशयारामसुरप्रतिष्ठासुहूर्त्ताः

#### वैशाखकृष्णपक्षे

२ शुके ५।२१५ या. अनु. भं शुद्धम् । मिथुने इ. ५ । ८ गु. ।

वैशाखशुक्लपक्षे  
४ चन्द्रे २।१।३८ या. आर्द्रा भं शुद्धम् । ०।५ उ. भद्रा व्याप्तिः ।  
६ बुधे २।१३३ या. पुष्य भं शुद्धम् । कर्के इ. ६ । १२ शु. के. ।

११ रवौ १।३० या. उ. फा. भं परं हस्तभं शुद्धम् । कर्के इ. ६ । १२ शु. के. अ. । २।३३ उ. भद्रा व्याप्तिः ।  
२२ चन्द्रे ८।१० या. हस्तभं शुद्धम् । लग्नं चित्यम् ।

#### ज्येष्ठकृष्णपक्षे

१ शुके १।२।८ या. अनु. भं शुद्धम् । कर्के इ. ५।१२ शु. रा. ष. ।  
५ बुधे ४।४।२० या. ध्रुवणभं शुद्धम् । ६।५ या. वै. ति. परं कर्के इ. ७।१२ रा. ।

#### ज्येष्ठशुक्लपक्षे

८ शनी १।८।५ या. उ.फा. भं शुद्धम् । ३।८।२३ या. व्य. ।  
१३ गुरो १।५।१० या. अनु. भं शुद्धम् । सिंहे इ. ६।१२ शु. ।

#### आषाढकृष्णपक्षे

५ गुरो १।२० या. धनिष्ठाभं परं शत.भं शुद्धम् । सिंहे इ. ७।१२ शु. ।

#### आषाढशुक्लपक्षे

६ शुके ३।४।८ या. उ.फा. भं शुद्धम् । कर्के इ. ५।१२ भो. । सिंहे इ. ५।१२ सू. बु. ।

#### माघकृष्णपक्षे

५ रवौ २।२० उ. उ.फा.भं शुद्धम् । मीने इ. ६ ।  
३ रवौ २।१३ या. उ.फा.भं शुद्धम् । ५।११ उ. भद्रा व्या. परं पञ्चेष्टलम्नाभावः ।

#### माघशुक्लपक्षे

२ रवौ ६।०१ या. उ.भा.भं शुद्धम् । वृषे इ. ५।१ राहु उ. गु. ।  
३ चन्द्रे ५।० या. उ.भा.भं शुद्धम् । पंचेष्टलम्नाभावः ।  
४ बुधे १।७।३ या. अश्विनीभं शुद्धम् । ६।५३ या. भ. व्या. परं मिथुने इ. ५।१२ रा. ।

८ रवौ १।३।३८ या. मृग.भं शुद्धम् । पंचेष्टलम्नाभावः ।

### अथ गृहारम्भमुहूर्त्ताः

#### चैत्रशुक्लपक्षे

८ बुधे १०।३० उ. पुष्यभं शुद्धम् । २२।१४ या. भद्रा व्या. । भद्रोपरान्त वृ.च.शु. सिंहे इ. ५।१२ चं. ।

१५ बुधे १६।२१ या. स्वातीभं शुद्धम् । वृ. च. शु. । व. च. शु. । पंचेष्टलम्नाभावः ।

#### वैशाखकृष्णपक्षे

२ शुके अनु. भं शुद्धम् । ४।५।११ उ.भ.व्या. । वृ. च. शु. । व.च.शु. । विष्टेः पूर्वं सिंहे इ. ५ ।

#### वैशाखशुक्लपक्षे

१२ चन्द्रे ८।१० उ. चित्राभं शुद्धम् । वृ. च. शु. । व. च. शु. । नात्रप्रद्योतना शुद्धिः सिंहे इ. ६।१२ सू. ।

#### श्रावणकृष्णपक्षे

२ बुधे २।४।४० या. धनिष्ठाभं परं शत.भं शुद्धम् । वृ. च. शु. । व. च.शु. । व. चं.शु. । लग्नं चित्यम् । ४।१० उ. भद्रा. व्या. ।

#### श्रावणशुक्लपक्षे

३ गुरो १६।१० या. भद्रा. व्या. परं शत.भं शुभम् । वृ. च. शु. । लग्नं चित्यम् ।

#### फाल्गुनकृष्णपक्षे

२ शनी २६।८ उ. उ.फा.भं शुद्धम् । वृ. च. शु. । व. च. शु. । कन्यायां इ. ५।१२ चं. ।  
४ चन्द्रे २।३।२० उ. चित्राभं शुद्धम् । वृ.च.शु. । व. च. शु. कन्यायां इ. ५ ।

### अथ गृहप्रवेश सुहूर्त्ताः ।

#### वैशाखकृष्णपक्षे

१२ चन्द्रे ४।४।१० या. उ. भा. भं शुद्धम् । क.च.शु. । सिंहे इ. ५।८ चं. ।

#### वैशाखशुक्लपक्षे

१० शनी १।१।३५ उ. उ.फा.भं शुद्धम् । क. च. शु. । सिंहे इ. ६ ।  
१२ चन्द्रे ८।१० उ. चित्राभं शुद्धम् । क. च. शु. । सिंहे इ. ६ ।

#### ज्येष्ठकृष्णपक्षे

१० चन्द्रे ०।५ उ. ३।०३८ या. भ. व्या. परं रेवती शुद्धम् । क. च. शु. । लग्नं चित्यम् ।  
१० चन्द्रे २२।८ या. चित्राभं परं स्वातीभं शुद्धम् । ४।२।४५ उ. भ. व्या. । क.च.शु. । विष्टेः पूर्वं सि. इ. ७।१२ शु. ।

#### ज्येष्ठशुक्लपक्षे

१० चन्द्रे २२।८ या. चित्राभं परं स्वातीभं शुद्धम् । ४।२।४५ उ. भ. व्या. । क.च.शु. । विष्टेः पूर्वं सि. इ. ७।१२ शु. ।

१३ गुरो १।५।१० या. अनु. भं शुद्धम् । क. च. शु. । सिंहे इ. ७।१२ शु. ।

#### फाल्गुनकृष्णपक्षे

६ शुके २६।३० उ. रोहिणीभं राहु विद्धं मात्र क. च. शु. ।

### अथ जीर्णगृहेऽग्न्यादिभयाज्ञवेऽपि ।

#### ज्येष्ठकृष्णपक्षे

६ गुरो ५।१।३० या. धनि.भं परं शत.भं शुद्धम् । १।५।३० उ. ४।८।२८ या. भ.व्या. । नात्र के.च.शु. ।  
७ शुके ५।८।१० या. शत.भं शुद्धम् । १।५।५३ या. वै. । नात्र क. च. शु. ।

#### श्रावणकृष्णपक्षे

२ बुधे २।४।४० या. धनिष्ठाभं परं शत.भं शुद्धम् । नात्र क. च. शु. ।  
३ गुरो १६।५० या. शत.भं शुद्धम् । नात्र क.च.शु. ।  
१० गुरो ५।०।३८ या. रोहिणीभं शुद्धम् । २।०।१३ या. भ. व्या. । क.च.शु. । कुम्भे इ. ५ ।

#### श्रावणशुक्लपक्षे

३ गुरो ५।१० उ. उ.फा.भं शुद्धम् । नात्र क. च. शु. ।  
५ शनी ५।३० या. चित्राभं परं स्वातीभं शुद्धम् । क. च. शु. सिंहे इ. ५।१२ सू.मं. । कुम्भे इ. ६ ।

#### फाल्गुनकृष्णपक्षे

६ गुरो १।०।२५ उ. उ.फा.भं राहु विद्धम् ।  
११ बुधे ४।४।३५ या. उ.भा.भं शुद्धम् । ५।३५ या. भ. व्या. । क. च. शु. । वृषे इ. ५ ।

#### मार्गशीर्षकृष्णपक्षे

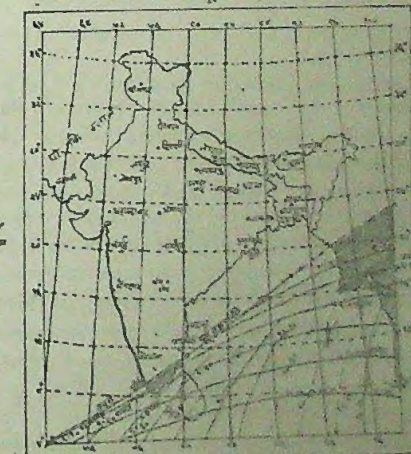
११ बुधे २।५।१३ उ. चित्राभं शुद्धम् । क. च. शु. । पंचेष्टलम्नाभावः ।  
१२ गुरो २।३।३ या. चित्राभं परं स्वातीभं शुद्धम् । पंचेष्टलम्नाभावः ।

#### मार्गशीर्षशुक्लपक्षे

६ शनी धनिष्ठाभं शुद्धम् । क.च.शु. । पंचेष्टलम्नाभावः ।  
१० गुरो १।५।४५ या. रेवतीभं शुद्धम् । क. च. शु. । पंचेष्टलम्नाभावः ।

श्री शुभ संवत् २०४० शके १६०५ ई० सन् १९८३ में ग्रहणों का विवरण ।

१. ज्येष्ठ कृष्ण ३० (अमा) शनिवार, दिनांक २१ जून १९८३ ई० को पूर्ण सूर्य ग्रहण भारत के दक्षिण भाग में दृश्य होगा । इसके अनिवार्यतः श्रीलङ्का, अण्डमन द्वीपसमूह, ब्रह्मदेश के द. की भाग, चीन, इण्डोनेशिया आदि देशों में दृश्य होगा ।  
२. ज्येष्ठ शुक्ल १५ (पूर्णिमा) शनिवार, दिनांक १५ जून १९८३ ई. खगोल चन्द्रग्रहण भारत में दृश्य नहीं होगा ।  
३. मार्गशीर्ष कृष्ण ३० (अमा) रविवार, दिनांक ४ दिस. १९८३ ई. को कच्छा सूर्यग्रहण । भारत में दृश्य नहीं होगा ।



भारत के दक्षिण भाग में दृश्य होने वाले सूर्यग्रहण का विवरण

नोट:- सूर्य विम्ब के व्यास को १ अङ्ग मानकर अङ्गुलीय भासमान को धिये गिये है ।

ग्रहण का स्थान	ग्रहण का स्थान	ग्रहण का स्थान	अङ्गुलीय भासमान
नगर	स्टेट	टा. घं. मि.	अ. व्य.
कन्याकुमारी	८-४६-३	१-००	०-२५०
करैकल	९-४-३	१-००	०-०४२
मदुरै	९-३-६	१-००	०-०१४
नागापट्टनम्	९-१-८	१-००	०-०१६
पोट्टल्लौर	८-४४-८	१-००	०-२२१
रामेश्वरम्	८-४९-२	१-००	०-२५२
तिरुनेवली	८-४०-४	१-००	०-१७६
त्रिवेन्द्रम्	८-४१-४	१-००	०-१३९
वृत्तीकारीन	८-४९-२	१-००	०-२१०
कोलम्बो	८-३३-९	१-००	०-३७७
रंगून	९-८-५	१-००	०-३२०







# दक्षिणांश देशों में फलघट्टादि साधन का प्रकार—

काशी के स्टैंडर्ड सूर्योदय से लिये हुए हृस्वसिद्ध पञ्चाङ्ग के तिथि, नक्षत्र, ग्रहादिको पर से दक्षिणांश देश के किसी नगर के स्टैंडर्ड सूर्योदय से तिथि, नक्षत्र, ग्रहादि जाना हो तो यहाँ चरान्तर के स्थान में चरयोग सेना चाहिये। अतः हृस्वसिद्ध पञ्चाङ्ग में दी हुई चरान्तर सारिणी का उपयोग यहाँ न कर नीचे लिये हुए प्रकार से गणित करना चाहिये। यहाँ स्पष्ट, X स्फा.

तथा काशी का चर सिद्धकर दोनों का योग करना चाहिये। क्योंकि, एक क्षितिज उन्मण्डल के नीचे तथा दूसरा उसके ऊपर होने से यहाँ चरयोग किया जाता है। अब चरयोग के धनर्ण का नियम इस प्रकार है—  
उत्तरक्रान्ति में काशी का क्षितिज इष्टनगर के क्षितिज के नीचे होने से चरयोग ऋण होता है और दक्षिण क्रान्ति में काशी का क्षितिज इष्टनगर के क्षितिज के ऊपर होने से चरयोग धन होता है। काशी से इष्टनगर पूर्व हो तो फलघटी ताचनार्थ देशान्तर को धन और पश्चिम हो तो ऋण समझना चाहिये और देशान्तर में चरयोग का संस्कार करने से फलघटी होती है। इस फलघटी का हृस्वसिद्ध पञ्चाङ्गस्य तिथ्यादि घटी में संस्कार करने से इष्ट नगर की तिथ्यादि घटी सिद्ध होती है। दक्षिणांश देशों में दिनार्थ साधन के लिये उत्तर क्रान्ति में इष्टनगर का चर ऋण तथा दक्षिण क्रान्ति में धन होता है। अतः इष्टनगर का दिनार्थ=१५ घटी ± चर  
वेधालय से निश्चित देशान्तर पर रहनेवाले किसी प्रदेश के स्थान विशेष को स्टैंडर्ड देश मानकर उस देश के मध्यमकाल को उस सम्पूर्ण प्रदेश के लिये प्रचलित स्टैंडर्ड काल माना जाता है। अतः सत्तयदेशीय स्टैंडर्ड काल भिन्न-भिन्न होते हैं। इन स्टैंडर्ड कालों को इष्टनगर के स्पष्ट काल में परिणत करने का यह नियम है—स्टैंडर्ड देशीय रेखांश और इष्टनगर के रेखांश इनका अन्तर स्टैंडर्ड देश से इष्टनगर का देशान्तर होता है। इस देशान्तर की स्टैंडर्ड काल में यदि स्टैंडर्ड देश स्पष्ट नगर से पूर्व हो तो धन तथा पश्चिम हो तो ऋण करने से वह स्टैंडर्ड काल इष्ट नगर के मध्यमकाल में परिणत होता है। इस मध्यमकाल में काल समीकरण का संस्कार करने से वह इष्टनगर के स्पष्टकाल में परिवर्तित होगा। पूर्व सांघित दिनार्थ को द्विगुणकर उसमें पाँच का भाग देने से वह इष्टनगर का स्पष्ट सूर्यास्तकाल होगा। इस सूर्यास्तकाल को १२ घण्टे में घटाने से स्पष्ट सूर्योदयकाल होगा। यदि इष्टनगर का स्टैंडर्ड सूर्योदय जानना हो तो इस स्पष्ट सूर्योदयकाल में काल समीकरण का विपरीत संस्कार करने से वह स्पष्ट सूर्योदयकाल का मध्यमकाल होगा। इस मध्यमकाल में इष्टनगर से इष्टनगर के स्टैंडर्ड देश का जो देशान्तर होगा उसको, यदि इष्टनगर इष्टनगर के स्टैंडर्ड देश से पूर्व होगा तो ऋण और पश्चिम होगा तो धन करने से वह इष्टनगर का स्टैंडर्ड सूर्योदयकाल होगा। इस स्टैंडर्ड सूर्योदयकाल का और जन्मेष्ट स्टैंडर्ड काल का जो अन्तर होगा अथवा पूर्वसांघित स्पष्ट सूर्योदयकाल और जन्मेष्ट स्पष्टकाल का जो अन्तर होगा वही हीरादि सूर्योदयादिष्टकाल होगा। इष्टकालिक स्पष्टसूर्य साधनार्थ सर्वत्र फलघटी तुल्य ही क्षितिजान्तर होने से पूर्व सांघित फलघटी में इष्टनगर के सूर्योदय से जो जन्मेष्टकाल होगा उसको जोड़कर योगफल तुल्य वेधालय से गुणित रवि गति को हृस्वसिद्ध पञ्चाङ्गस्य औदयिक स्पष्ट सूर्य में, यदि इष्टनगर काशी से पश्चिम हो तो धन और पूर्व हो तो ऋण करने से इष्टनगर में इष्टकालिक सूर्य होगा। जिस तरह वेधालय के निश्रीय कालीन ग्रह ही वेधालय से भारतवर्षीय स्टैंडर्ड देश के देशान्तर तुल्यकाल के हृस्वसिद्ध पञ्चाङ्गस्य ग्रह होते हैं उसी तरह वेधालय से भारत वर्षातिरिक्त किसी देश के स्टैंडर्ड देशीय देशान्तर तुल्यकाल के हृस्वसिद्ध पञ्चाङ्गस्य ग्रह होंगे वह स्पष्ट है। अतः वेधालय से भारतवर्षातिरिक्त किसी स्टैंडर्ड देश का देशान्तरकाल और जन्म का स्टैंडर्ड काल इन दोनों के अन्तर।

## प्लूटो—

गणितज्ञ पर्सिवल लवेल महाशय को हर्शल ग्रह के गति में विस्वादा का अनुभव होने से उनकी विश्वास हुआ कि नेपच्यून ग्रह के बाद कोई ग्रह है जिसका प्रभाव हर्शल की गति पर होता है। अतः उन्होंने अपने जीवन काल में इस ग्रह के खोज में जो प्रयत्न किये उनके परिणाम स्वरूप लवेल वेधालय के गणितज्ञ सी० डब्ल्यू टॉम्बू महाशय ने दिनाङ्क २३ जनवरी सन् १८३० ई० को आकाश के आर्द्र नक्षत्र प्रदेश में इस ग्रह का पता लगाया। यह सूर्य के चारों ओर ऐसे दीर्घवृत्त में भ्रमण करता है जिसका बृहदक्ष ७६ और लघुअक्ष तीन प्रतिशत छोटा है। इस ग्रह की कक्षा का घरातल क्रांतिवृत्त के घरातल से १७ अंश का कोण बनाता है और अन्तरिक्ष में इस ग्रह के स्पष्ट मार्ग का क्रांतिवृत्त के साथ प्रथम संपात आर्द्र नक्षत्र प्रदेश के समीप तथा द्वितीय संपात उत्तराषाढा नक्षत्र प्रदेश के समीप होता है। इस ग्रह का पता लगने के समय वह अपने प्रथम संपात के समीप था। सूर्य की प्रदक्षिणा करने में इस ग्रह को २४८ वर्ष का समय अपेक्षित रहता है। एवं सूर्य की उष्णता इस ग्रह पर इतनी कम पहुँचती है जिससे इस ग्रह का तापमान २०० सेल्सियस नीचे रहता है। सूर्य का घूर्णन से जो अन्तर, उसका ३६५ गुना अन्तर सूर्य से प्लूटो का है।

प्रातः स्टैंडर्ड टाइम १०.५५ मि. २०.४ के समय को प्लूटो ग्रह के स्पष्ट निरूपण मोर्बास आठ-आठ दिन के अन्तर में नीचे लिखे गये हैं। सन् १९८३-८४ ई०

तारीख	अं. क. वि.	तारीख	अं. क. वि.	तारीख	अं. क. वि.	तारीख	अं. क. वि.
२४.१५	६ ४ ३० ५३	जुलाई २६	६ ३ ११ १०	नवम्बर ७	६ ६ २५ १८	फरवरी १७	६ ० ० ३२
२१.११	६ ४ २६ १६	अगस्त ३	६ ३ १७ २१	१५	६ ४ ३५ ५६	२५	६ ० २२ ५६
२९.११	६ ४ १६ ३३	११	६ ३ ५५ ३०	२३	६ ७ १४ ४८	मार्च ५	६ ८ १६ ११
मई ७	६ ४ १३ ११	१९	६ ३ ३५ ५५	दिसम्बर १	६ ७ १८ ३८	१२	६ ८ ७ ३७
१५	६ ३ ४९ १३	२७	६ ३ ४७ ३३	१६	६ ७ ३४ १५	२०	६ ७ ५७ २६
२३	६ ३ ३८ ०	सितम्बर ४	६ ४ ११ १९	१८	६ ७ ४८ १५	२८	६ ७ ५५ ५७
२१	६ ३ २८ ६	१९	६ ४ १६ २०	२५	६ ८ ० ३३	अप्रैल ५	६ ७ ३३ २७
जून ८	६ ३ १९ ४६	२०	६ ४ ३२ ४७	जन. ८	६ ८ १३ ५१	८	६ ८ १७ २२
१६	६ ३ ११ १२	२८	६ ४ ५० १७	८	६ ८ १७ २२	८	६ ८ १७ २२
१४	६ ३ ०३ ३६	अक्टू. ६	६ ५ ८ ३८	१६	६ ८ २४ ०	वक्र मार्ग का	अं. वि.
जुल. २२	६ ३ ८ १	१४	६ ५ २८ ३५	२४	६ ८ २८ २३	जुलाई ३	मा. वि.
१०	६ ३ ५३ ५५	२२	६ ५ ४५ ५१	फरवरी १	६ ८ ३० २७	फर. ५	व. वि.
१८	६ ३ ७ २३	२०	६ ६ ११	२८	६ ८ ३० १०	२८	६ ८ ३० १०

तुल्यकाल को चलन मानकर उससे गुणित हृस्वसिद्ध पञ्चाङ्गस्य मोमादिग्रहण को मोमादि ग्रह में यदि ग्रह वही होगा तो ऋण और मार्गां होगा तो धन करने से वह इष्टनगर का इष्टकालिक ग्रह होगा।  
लग्न साधन के लिये, इष्टनगर की पलभा से चरखण्ड लाकर उनको क्रम से मेपादि तीन राशियों के लङ्कोद्यों में धन तथा कर्कोदि राशियों के लङ्कोद्यों में विपरीत क्रम से ऋण करने से इष्टनगर के मेपादि ६ राशियों के उदयमान होंगे यही व्युत्क्रम से त्रुणादि ६ राशियों के उदयमान होते हैं। दक्षिणांश देश के नगर में इस प्रकार सिद्ध किये गये स्वदेशीय राशुदय मानों से लग्न साधन करना चाहिये।

## श्रीकाश्यां राशुदयमानानि।

राशयः	मे.	वृ.	मि.	क.	ति.	कं.	उ.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
पट्टयः	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
पलानि	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५

## लङ्कायां राशुदयमानानि।

राशयः	मे.	वृ.	मि.	क.	ति.	कं.	उ.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
पट्टयः	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
पलानि	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५

## अथ सर्वथातचक्रं रोगार्ते गमने रणे नो संगले

सू. घा.	४	८	१२	५	४	६	१०	७	११	२	३	३
चं. घा.	१	५	६	२	६	१०	३	७	८	१२	३	३
मी. घा.	५	६	१	६	१०	२	७	४	८	१२	३	३
वृ. घा.	२	६	१०	३	७	११	४	८	५	६	१२	३
गु. घा.	६	१०	२	७	११	३	८	१२	६	१	५	५
शु. घा.	७	१०	३	८	१२	४	९	१०	२	५	६	६
श. घा.	३	७	११	४	८	१२	५	६	१०	१	२	२
र. घा.	८	७	६	५	१०	११	२	३	४	५	६	६
के. घा.	८	७	१०	१	११	५	६	४	२	३	४	४
मा. घा.	का. मा.	पो. मा.	पा. चं.	के. ज्ये.	वा. आ.	मा. जा.						
तिथि	१	५	२	२	३	५	४	१	३	४	३	५
०	६	१०	७	७	८	१०	६	६	८	८	८	१०
प्रातः	११	१५	२२	२२	२३	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६
वा. घा.	सू.	सू.	चं.	वृ.	सू.	सू.	सू.	सू.	सू.	सू.	सू.	सू.
न. घा.	म.	म.	म.	म.	म.	म.	म.	म.	म.	म.	म.	म.
मो. घा.	वि.	श.	श.	श.	श.	श.	श.	श.	श.	श.	श.	श.
न. घा.	१	२	४	७	१०	१२	६	८	११	३	५	५
प. घा.	मं.	सू.	गु.	चं.	सू.	गु.	मं.	गु.	वा.	सू.	गु.	सू.
घा. घा.	वि.	वा.	सू.	क.	वि.	वा.	सू.	क.	वि.	वा.	सू.	क.
व. घा.	श.	के.	ज्ये.	ति.	सू.	के.	ज्ये.	ति.	सू.	के.	ज्ये.	ति.
संज्ञा	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री
संज्ञा	कू.	लो.	कू.	लो.	कू.	लो.	कू.	लो.	कू.	लो.	कू.	लो.
संज्ञा	कू.	लो.	कू.	लो.	कू.	लो.	कू.	लो.	कू.	लो.	कू.	लो.
न. घा.	र.	ज्ये.	लो.	वा.	मू.	वि.	कू.	पू.	कू.	पू.	कू.	पू.
०	मे.	वृ.	मि.	क.	ति.	कं.	उ.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.

## दीर्घविस्तारमुद्रादियुता पिण्डसाधनार्थ सारिणी।

दीर्घान्तराद्युद्धादियुता पिण्डसाधनाय सारिणी ।

दिनम्	वृत्तः	आयः	अयः	पतः	ऊर्ध्वः	शूलः	तिथिः	योगः	गोपः	द्विगुणः	वृत्तः	आयः	अयः	पतः	ऊर्ध्वः	शूलः	तिथिः	योगः	गोपः	
२१.१६	७	७	९	१२	५	६	१२	३	७२	५१	१	३	७	१२	५	६	१२	३	७२	५१
२५.२१	५	७	९	१२	७	१५	२१	१०	६	५१	१	३	७	१२	५	६	१२	३	७२	५१
२७.२५	३	६	९	१२	१	२७	१५	२७	१२	६	५१	१	३	७	१२	५	६	१२	३	७२
३१.२९	३	६	९	१२	७	५	११	२	५	५१	१	३	७	१२	५	६	१२	३	७२	५१
३३.२७	३	६	९	१२	३	२७	१२	६	५	५१	१	३	७	१२	५	६	१२	३	७२	५१
३५.२६	७	७	९	१२	५	१०	७	११	२	३	७	१२	५	६	१२	३	७२	५१	१०	६
३७.३३	७	९	१२	५	१५	३	१२	६	५	५१	७	७	९	१२	५	६	१२	३	७२	५१
३९.३१	५	६	९	१२	७	१५	२१	१०	६	५१	७	७	९	१२	५	६	१२	३	७२	५१
४१.३३	५	६	९	१२	७	१५	२१	१०	६	५१	७	७	९	१२	५	६	१२	३	७२	५१
४३.३३	७	५	९	१२	५	१५	२१	१०	६	५१	७	७	९	१२	५	६	१२	३	७२	५१
४५.३५	५	७	९	१२	७	१२	१५	१२	१०	६	५१	७	७	९	१२	५	६	१२	३	७२
४७.३५	३	७	९	१२	५	१५	२१	१०	६	५१	७	७	९	१२	५	६	१२	३	७२	५१
४९.३६	७	९	१२	५	११	२१	१५	७२	५१	७	७	९	१२	५	६	१२	३	७२	५१	१०
५३.३५	१	७	१	४	३	२५	१०	६	५१	७	७	९	१२	५	६	१२	३	७२	५१	१०
५३.४१	३	५	३	४	१	१०	५	६	५१	७	७	९	१२	५	६	१२	३	७२	५१	१०
५५.३७	१	५	९	१२	३	१५	२१	१०	६	५१	७	७	९	१२	५	६	१२	३	७२	५१
५५.४१	७	९	१२	५	११	२१	१५	७२	५१	७	७	९	१२	५	६	१२	३	७२	५१	१०
५७.४१	७	५	९	१२	५	११	२१	१०	६	५१	७	७	९	१२	५	६	१२	३	७२	५१
५७.४५	३	२	९	१२	१	१८	१५	१०	६	५१	७	७	९	१२	५	६	१२	३	७२	५१
५८.४१	१	७	३	५	७	७	१८	१५	१०	६	५१	७	७	९	१२	५	६	१२	३	७२
५८.४५	३	७	९	१२	५	१८	१५	१०	६	५१	७	७	९	१२	५	६	१२	३	७२	५१
५८.४९	५	७	९	१२	७	१८	१५	१०	६	५१	७	७	९	१२	५	६	१२	३	७२	५१
५९.४५	७	५	९	१२	७	१८	१५	१०	६	५१	७	७	९	१२	५	६	१२	३	७२	५१
५९.४९	७	५	९	१२	७	१८	१५	१०	६	५१	७	७	९	१२	५	६	१२	३	७२	५१
६१.४५	३	७	९	१२	५	१८	१५	१०	६	५१	७	७	९	१२	५	६	१२	३	७२	५१
६१.४९	३	७	९	१२	५	१८	१५	१०	६	५१	७	७	९	१२	५	६	१२	३	७२	५१
६१.५३	३	७	९	१२	५	१८	१५	१०	६	५१	७	७	९	१२	५	६	१२	३	७२	५१
६१.५७	३	७	९	१२	५	१८	१५	१०	६	५१	७	७	९	१२	५	६	१२	३	७२	५१
६१.५९	३	७	९	१२	५	१८	१५	१०	६	५१	७	७	९	१२	५	६	१२	३	७२	५१
६१.५९	३	७	९	१२	५	१८	१५	१०	६	५१	७	७	९	१२	५	६	१२	३	७२	५१
६१.५९	३	७	९	१२	५	१८	१५	१०	६	५१	७	७	९	१२	५	६	१२	३	७२	५१
६१.५९	३	७	९	१२	५	१८	१५	१०	६	५१	७	७	९	१२	५	६	१२	३	७२	५१
६१.५९	३	७	९	१२	५	१८	१५	१०	६	५१	७	७	९	१२	५	६	१२	३	७२	५१
६१.५९	३	७	९	१२	५	१८	१५	१०	६	५१	७	७	९	१२	५	६	१२	३	७२	५१
६१.५९	३	७	९	१२	५	१८	१५	१०	६	५१	७	७	९	१२	५	६	१२	३	७२	५१
६१.५९	३	७	९	१२	५	१८	१५	१०	६	५१	७	७	९	१२	५	६	१२	३	७२	५१
६१.५९	३	७	९	१२	५	१८	१५	१०	६	५१	७	७	९	१२	५	६	१२	३	७२	५१
६१.५९	३	७	९	१२	५	१८	१५	१०	६	५१	७	७	९	१२	५	६	१२	३	७२	५१
६१.५९	३	७	९	१२	५	१८	१५	१०	६	५१	७	७	९	१२	५	६	१२	३	७२	५१
६१.५९	३	७	९	१२	५	१८	१५	१०	६	५१	७	७	९	१२	५	६	१२	३	७२	५१
६१.५९	३	७	९	१२	५	१८	१५	१०	६	५१	७	७	९	१२	५	६	१२	३	७२	५१
६१.५९	३	७	९	१२	५	१८	१५	१०	६	५१	७	७	९	१२	५	६	१२	३	७२	५१
६१.५९	३	७	९	१२	५	१८	१५	१०	६	५१	७	७	९	१२	५	६	१२	३	७२	५१
६१.५९	३	७	९	१२	५	१८	१५	१०	६	५१	७	७	९	१२	५	६	१२	३	७२	५१
६१.५९	३	७	९	१२	५	१८	१५	१०	६	५१	७	७	९	१२	५	६	१२	३	७२	५१
६१.५९	३	७	९	१२	५	१८	१५	१०	६	५१	७	७	९	१२	५	६	१२	३	७२	५१
६१.५९	३	७	९	१२	५	१८	१५	१०	६	५१	७	७	९	१२	५	६	१२	३	७२	५१
६१.५९	३	७	९	१२	५	१८	१५	१०	६	५१	७	७	९	१२	५	६	१२	३	७२	५१
६१.५९	३	७	९	१२	५	१८	१५	१०	६	५१	७	७	९	१२	५	६	१२	३	७२	५१
६१.५९	३	७	९	१२	५	१८	१५	१०	६	५१	७	७	९	१२	५	६	१२	३	७२	५१
६१.५९	३	७	९	१२	५	१८	१५	१०	६	५१	७	७	९	१२	५	६	१२	३	७२	५१
६१.५९	३	७	९	१२	५	१८	१५	१०	६	५१	७	७	९	१२	५	६	१२	३	७२	५१
६१.५९	३	७	९	१२	५	१८	१५	१०	६	५१	७	७	९	१२	५	६	१२	३	७२	५१
६१.५९	३	७	९	१२	५	१८	१५	१०	६	५१	७	७	९	१२	५	६	१२	३	७२	५१
६१.५९	३	७	९	१२	५	१८	१५	१०	६	५१	७	७	९	१२	५	६	१२	३	७२	५१
६१.५९	३	७	९	१२	५	१८	१५	१०	६	५१	७	७	९	१२	५	६	१२	३	७२	५१
६१.५९	३	७	९	१२	५	१८	१५	१०	६	५१	७	७	९	१२	५	६	१२	३	७२	५१
६१.५९	३	७	९	१२	५	१८	१५	१०	६	५१	७	७	९	१२	५	६	१२	३	७२	५१
६१.५९	३	७	९	१२	५	१८	१५	१०	६	५१	७	७	९	१२	५	६	१२	३	७२	५१
६१.५९	३	७	९	१२	५	१८	१५	१०	६	५१	७	७	९	१२	५	६	१२	३	७२	५१
६१.५९	३	७	९	१२	५	१८	१५	१०	६	५१	७	७	९	१२	५	६	१२	३	७२	५१
६१.५९	३	७	९	१२	५	१८	१५	१०	६	५१	७	७	९	१२	५	६	१२	३	७२	५१
६१.५९	३	७	९	१२	५	१८	१५	१०	६	५१	७	७	९	१२	५	६	१२	३	७२	५१
६१.५९	३	७	९	१२	५	१८	१५	१०	६	५१	७	७	९	१२	५	६	१२	३	७२	५१
६१.५९	३	७	९	१२	५	१८	१५	१०	६	५१	७	७	९	१२	५					



[illegible]

स्थान	न.	कलावि
पुष्पे	१	अग्रिवा
पूर्व	४	उद्वतनम्
दक्षिणे	१	लामः
पश्चिम	४	लमोप्रा.
उत्तरे	४	फलहः
गन्धे	४	दिनाशः
अयः	३	विद्यता
कण्ठे	३	स्थिरम्

अथ गृहे गृहस्योच्छ्वायनिर्णयः	कथानि १।१।५।६।७।८।११।१२ स्वामिनुभारष्टे ।	माम वासचक्रगृह
विस्तारयोद्धासः सचतुर्दशो भवेद्गृहो	लग्न लग्नात् १। ४। ७। १०। १३। शुभः ॥ पाषाः	भान्वासचक्रभंवावत
पञ्चायः ॥ द्वादशभग्नोक्तो भूमी वा ह्यासमस्त	राशिः १।६।११। ह्यायेनुद् ८।१२ शुभपापरहितेनु शुभलपडे	
नाम् ॥ गृहभित्तिप्रमाणम् ॥ ध्यासात् योद्धभाग	गुणशुक्रावर्तस्तवात्ययाद्वयमदीचरादथशाहितिपति	
सर्वेषां संपत्तां भवति भित्तिः ॥ पयवेष्टकाकृतातां	रहितसमये ॥	मस्तक ७ घन. मा. ला.
वारकृताताम् न विकल्पः ॥ तथा च गमः ॥	भद्राकुयोपाष्टमचन्द्रचक्रशुद्धितहितियःसचत्रगुदीच ।	पृष्ठे ७ हानिःनैयः
विस्तारयोद्धासिन गृहभित्ति प्रकल्पयेत् ॥ नव	एतेष्वेव नक्षत्रवाररितिषसमयेषु ध्वणक्षंयुक्तेषु मठ	हृदये ७ सुषं लाभः
प्रयोवताश्च करैरतिवा प्रकल्पयेत् ॥	देवालययाधारभोगिषु शुभः ॥ भौमवारस्यंवाररिक्तानिपि	पादे ७ पर्वटनम्
	श्रमा चरनलम्बेनु कदापि न गृहारम्भः कर्तव्यः ॥	

गृहे सूर्यचन्द्रवेधनिर्णयः ।		अथ गृहे शिलाप्रमाणानि		रविमातृचुहोचक्रम्	
चन्द्रविष्टं गृहं कार्यं सुवेष्टितं जलाशयम् ॥		शिलाप्रमाणं क्रमशः प्रविष्टं वर्णानुवर्णेन तथा भूजलानाम् ॥		गृहे	१ श्रीलामः
सूरो वातापिशा वापि द्वाभ्यां विष्टा प्रसृत्यते । पूर्वा		अथैकाविशद्वानि च नन्द्या विस्तारके व्याप्तानि तदर्थम् ॥		दीर्घे	४ मृत्युभयम्
रदर्थे रविवेधो वासोत्तरधौ चन्द्रवेधः उत्तरः ।		तदर्थमानं स्थयिषण्डकस्यात् ऊर्ध्वाधिकायूनतरा न		वाधे	= तुल्यम्
अन्यथा - सन्निहं दैव्यायतनं तत्र विष्टं		कार्यं । तन्मात्रं न तस्या भद्रा जया रिक्ता पूर्णति ।		गर्भे	५ धिनांशः
न कर्तव्यः ।		पञ्च कुम्भं तन्मात्रानिपथ महाभयं शङ्क मकर समुद्र इति		हस्ते	२ सुप्तक्तिः
		प्रधानशिलायः पञ्चाधारशिला भवन्ति ॥		चरते	३

वारवेलाज्ञानाय चक्रम							
र.	सो.	मं.	उं.	शु.	शुं.	न.	वारा:
४५	७१२	६१२	५१३	७१८	३१५	११६	दिने
६१४	७१४	२	६१४	५१८	३	११६	रात्रौ

दिने — रवौ वर्ज्यं चतुःपञ्च सोमे सप्तद्वयन्तवा ।  
 कुजे षट्द्वयं चैव बुधे पञ्चतुतीयकम् ॥ गुरोत्तमाष्टकं चैव  
 शुक्रं वेदतुतीयकम् । शनवाश्रान्तपल्लव वारवेलेति  
 निश्चिता ॥ रात्रौ — रवौ रात्राद्यौ हिमगौ ह्याश्वी द्वयं  
 महीजे च बुधे रसाश्वी । गुरो गराद्यौ मृगुजे तुर्वी ये  
 शनौ रसाश्वं निशियारवेला ॥

अथ भद्रायामुखपुच्छादिपरिक्लानम् ।

४	८	११	१५	३	७	१०	१४	यामो तिथिनाम
---	---	----	----	---	---	----	----	--------------

प. आ. उ. नै. ई. व. वा. प.	विनिविद्यु मूख
५ २ ७ ४ ८ ३ ६ १	एषु वामेषु आदौ
५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५	धयःपराःविद्येराः
८ १ ६ ३ ७ २ ५ ४	एषु वामेषु अन्ते
३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३	पटिष्वपुच्छगुभक्त
अथ दित्तमानस्य १६ कलांशेनदुष्टमुहोविधानम्	
र. सो. म. उ. गु. पु. श.	वायव्यः
१४ १४ ३ ८ १३ ३ ३	दुष्टशयः
	उत्तरः
	पश्चिमः
	नाशः

११	१०	५	४	२	वि. कुलकः	निः
११	१०	७	५	२	रा. कुलकः	कुनिः
५	४	२	१४	२	कटकशः	अथ
५	४	२	१४	१०	कालवेला	निचन
१०	१०	४	१४	१०	अध्याय	यमपत्रकः
१०	५	४	२	१४	यमघटः	अथ

अथ गृहप्रवेशमुहूर्त चाम्पू ।  
 व. ज्ये. माघ सा. जीर्ण श्रावण, मास. कातिके  
 मासाः  
 मासजि तवेऽयमय्यादिभ्यश्च ।

भाति	उत्तरा ३, अनु. रो. मृ. वि. रे. शुभचक्र
वारा:	चं. बु. गृ. शु. तिथयः १ २ ३
तिथयः	४ ७ ८ १० ११ १२ १३
लघुप्राणि	२ ५ ६ ११ शुभाः १४ १५ १२ मन्व
	जन्मराशिभाभ्यामुपचर्यादभ्यासाः स्थिररा
	लघुप्रा १५ १६ १७ १८ १९ २० स्थानियु शु
	अंशः १ पापाः शुभाः १ शुभापवर्गि शु
	२ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २०

रोहिणीनक्षत्रात्कृप- चक्रम्		जलाशयारम्भमुहूर्तः ।
दिक त.	फलानि	
मध्ये १	शौ प्रसङ्गः ।	भानि । ह. अ. नुरे. उत्तरा ३
पूर्व ३	निजलम्	घ. स. म. रो. पृथ. मृ.
अनन ३	अमृजलम्	पू. पा. यु. सुप्तितवारस्तादि
दक्षि. ३	निजलम्	दीपपरहिते च. बु. द्र. यु. वारे
नैऋ. ३	अमृत जलम्	च रिक्तोक्त तिथौ शुभः ।
पश्चिमे ३	निर्मलजलम्	लग्ने जीवे ज्ञेय वायुसंलक्ष
वायव्ये ३	जलहातः	श्रेः शुर्कवापि मेघपराणस्ये ।
उत्तरे ३	मयुरजलम्	आप्ये चन्द्रे सर्वतोयाय
ईशान ३	सौरजलम्	पाणामारम्भाभ्युःसिद्धये
		निर्विकल्पम् ॥

आनेत्यां लननं कुण्डित्तिहाद्राशिप्रये रवौ ।  
कुम्भप्रये तु वायव्यां नैऋत्यांवृषप्रये ॥  
ईशान्यां लननं वास्तो वृश्चिकादि प्रये भुभाः ॥  
अथ जलाशयारामसुप्रतिष्ठासूक्तविचारः ।  
उत्तराशनेनपीनसंकातो वृ. गु. च. ईश्वरबलपुते  
भुग. रे. चित्रा. अनु. हस्त कवि. पुष्य स्वा  
मानि गुत. धनि. धनि. जल. उत्तरा रे रोहिणी ।  
लग्नात् केन्द्रकीर्त्या हयाय स्थानेषु भुभाः ॥  
३. ६। ११ पापाः भुभाः । पञ्चोद्वेष्टेन  
लग्नेन कायं पृ. कर्तुर्जंगमलग्नयोरहमराशि

<p>होतलमेतत । पूर्वोक्तलक्षणाप्रशुद्धिवास्तविक नमनवल्लिगृहप्रवेशे च कुप्यदिति ।</p>	
<p>द्वारचक्रमकैभान्त</p>	
न.	कलाति
४	राज्यलक्षः
२	हानिः
४	घनप्राप्तिः
२	भयम्
४	सुखाभयम्

<p>द्वारशाखाचक्रम् !</p>	
<p>सूर्यभान्त ।</p>	
स्थान	न.
शिरसि	४
क्षीप्राणि	४

७	२	मृत्युः	काण	८	नीत्यं
५	४	ब्रह्मप्राप्तिः	शाखा	८	मृत्युः
	२	शोकसमयः	देहत्यागः	३	मृत्युः
मं	३	घनलाभः	मध्ये	४	सौख्यं

अथ उन्नयनलाभनयनम् ।

नीचप्रभातरं कार्यं वृद्धादत्तं यथा भवेत्

तात्कालिककरणवशेन संकातीनां बाह्यावस्थायुषादिज्ञानाय चक्रम ।											
करण	वय.	बालव	कालव	तैत्तल	गर	वजिज	विष्टि	शकुनि	चतुष्प.	नाग	किस्त्रु
स्थिति	निवि.	उपवि.	ऊर्ध्व	मुत्प	निविष्ट	निविष्ट	निविष्ट	ऊर्ध्व	मुत्प	मुत्प	ऊर्ध्व
तत्फल	सम	मध्यम	महर्घ	मध्यम	मध्यम	मध्यम	समर्घ	महर्घ	महर्घ	समर्घ	महर्घ
बाह्य	सिंह	व्याघ्र	वाराह	गर्धभ	हस्त	सहि	अश्व	स्वान	मेघ	वृषभ	कुम्भ
उपव.	गज	अश्व	वृषभ	मेघ	गर्धभ	उष्ट्र	सिंह	शार्ङ्ग	मर्षिण	व्याघ्र	बानर
तत्फल	भोक्तिः	भयम्	पीडा	सुनिद्र	लम्बी	वैश	स्वयं	सुनिद्र	वैश	स्वयं	सुनिद्र
वस्त्र	श्वेत	पीत	हरित	पांडु	आरक्त	श्याम	कृष्ण	चित्र	कंबल	तम्र	धना
उपव.	श्वेत	रक्त	चित्र	पीत	नील	कंबल	पट्ट	अजिन	कुसुम	वस्त्रक	पेयज
आयुषं	वन्धूक	गदा	बल्ल	दण्ड	धनुष	तोमर	कुत	पाश	अंकुश	धरा	बाण
भक्ष्य	अन्न	पायस	भक्ष	पकान	दुध	दधि	चित्रान	गुड	मधु	शुक्र	अमृत

[illegible]

विनाशः स्याच्च सकाशात्स्वादीनां संहृयता । स्थितानां नष्टेषु च ।	<p><b>स्थूल चन्द्रशुद्धोन्नतिशानम्</b></p> <p>दैवजरंजनेवीनेधगतस्त्रया भवेत्ताप्योन्नतः सदा । सप्तम्युद्धी  वृषकुम्भे शेववेयूत्तरोन्नतः । दाम्योसते च बुधमिश्र समरश्च सप्त  विषी । सुभिक्षां सोमदिग्भागे चोन्नते भस्त्राच्छने । मूलाधारे  विषी भात श्रद्धिते सहृते रजः ।</p> <p><b>अथ तिथिवारयोर्योगान्मुख्ययोगशानाचक्र ।</b></p>	<p><b>अथ संक्रान्ते शुद्धोन्नतशान</b></p> <table border="1"> <tr> <td>सु०</td> <td>सका</td> <td>यस्य</td> </tr> <tr> <td>२५</td> <td>गुरु</td> <td>२५.२५.२५</td> </tr> <tr> <td>२५</td> <td>शुक्र</td> <td>२५.२५.२५</td> </tr> <tr> <td>२५</td> <td>मंगल</td> <td>२५.२५.२५</td> </tr> <tr> <td>२५</td> <td>बुध</td> <td>२५.२५.२५</td> </tr> <tr> <td>२५</td> <td>शनि</td> <td>२५.२५.२५</td> </tr> <tr> <td>२५</td> <td>राहु</td> <td>२५.२५.२५</td> </tr> <tr> <td>२५</td> <td>केतु</td> <td>२५.२५.२५</td> </tr> </table>	सु०	सका	यस्य	२५	गुरु	२५.२५.२५	२५	शुक्र	२५.२५.२५	२५	मंगल	२५.२५.२५	२५	बुध	२५.२५.२५	२५	शनि	२५.२५.२५	२५	राहु	२५.२५.२५	२५	केतु	२५.२५.२५
सु०	सका	यस्य																								
२५	गुरु	२५.२५.२५																								
२५	शुक्र	२५.२५.२५																								
२५	मंगल	२५.२५.२५																								
२५	बुध	२५.२५.२५																								
२५	शनि	२५.२५.२५																								
२५	राहु	२५.२५.२५																								
२५	केतु	२५.२५.२५																								

सूयं	चक्र	मंगल	गुप	गुह	गुह	सात	वार	शिवपुराणान्	आम.प.
१.१.११	२.७.१२	१.६.११	३.८.१३	४.९.१२	२.७.११	५.१०.१५	तिथय	मार्गश्रम. च ।	पृ. ३ स

अथहर्षबलानयनम् ।

उपरोक्त भाष्यमुक्तितःप्रथमः ॥ य हर्षः स्वीयचरयः स्वराशौ च सोऽत्र हर्षबलविकारीति लो  
 सप्रसूति निमित्तमिति स्वीयां पृष्टवायाश्च हर्षबलं लुप्तमम् । विवा प्रवेशेव नृणां राज्ञो ह  
 कर्तुं शक्यत इत्यर्थः ॥ नात्रिकमुष्णोमानुसुखपट्टहाः देवाः स्वीयता ज्ञेयाः ।

अथ केतकीयमध्यममन्त्रेन ।			
अयनशशांनायचक्रम ।			
१० गुणोत्तरः ॥ १० गुणोत्तरः ॥			
१०	५०	१०	२०
२१	४०	२०	१५
३०	३१	३०	५२
४१	२१	४०	२५
५१	११	५०	१२
६१	०१	६०	०१
७१	५१	७०	५१
८१	४१	८०	४१
९१	३१	९०	३१
०१	२१	००	२१
०१	११	००	११
०१	०१	००	०१
०१	०१	००	०१
अथ केतकीयमध्यममन्त्रेन ।			

[illegible][illegible]

वस्त्र	के	को.
हस्त	मु. १२ रु.	१० रु.
दस्त	मु. १२ रु.	१० रु.
आभूष.	वि.	५० रु.
रोहि.	स्वा.	५० रु.
कु.	११ मी.	१२ रु.



[illegible]



[illegible]



















[illegible]

श्री शुभसंवत् २०४० शके १९०५ आषाढ कृष्णपक्षः । रविवार २० जुलै १९२३ ई. २०४० ।  
उत्तरायणम् । उत्तराश्विः शीघ्रम् । ११

वटसावित्रीव्रतपारणम् । सर्वाथसिद्धि योगः ४३१० उ. । आशुविद्य आशुः ।  
मृत्यु योगः ।  
म. ५३१ (दि. ७१२४) उ. ३८३३ (रा. ८३७) या. मित्यनेयुधः ४०५५ । स्वायोजय यायः ३०५३ उ. ।  
आद्र्यायां भोगः ४३३८ । बुधास्तः पूर्वस्याम् ३४१० । संकष्ट ४ ।  
यायीजयद योगः ९१२० या. ।  
म. ५३४० (रा. ३१२९) उ. जुला ७ । आद्र्यायां बुधः ५७१९० । मघासुसिहेव युक्तः ४२१३३ । मघासुसिहेव ३०५० ।  
म. २७५२ (दि. ४१२२) या. । यायीजयद योगः २२४३ उ. ।  
काल ८ । शीतला ८ । सर्वाथसिद्धि योगः २७४३ या. ।  
मानङ्ग योगः । [B व्रतं स्मार्तानाम् । सर्वाथसिद्धि योगः २०५३ या. ।  
म. ३२४२ (दि. ६१२९) उ. । सर्वाथसिद्धि योगः ३२४२ या. । वसुन्धरि योगः ३०५३ या. ।  
म. १५३३ (दि. ६१०) या. । पुनर्वसुर्वोदकः १५४३३ (दि. १११३२) । ज्येष्ठ योगः । मघासुसिहेव ३०५३ या. ।  
योगिनी ११ व्रतं वैष्णवानाम् । [A ज. योगः । वरुणाजी । म. मानङ्ग युक्तः । उरुवसुर्वोदक ३०५३ या. । योगिनी ११ ।  
म. ४०३८ (रा. २१२८) उ. । पुनर्वसुर्वोदकः १०५८ । प्रदीप १३ व्रतम् । म. म. १५३३ या. । म. १५३३ ।  
म. १३५५ (दि. १०५०) या. । मासशिवरात्रिः १४ व्रतम् । [C व्रतं वैष्णवानाम् । म. १५३३ या. ।  
दर्शः ।







श्रीशम संवत् २०४० शके १९०५ श्रावण कृष्णपक्षः ।

श्रीशुभ संवत् २०४० शके १९०५ आषाढ कृष्णपक्षः । २५ जुलाई से ८ अगस्त १९०३ ई. तक  
दसिण्यायनम् । उत्तर गोलार्धः वर्षसु ॥ E.

भौमोदयः पूर्वस्याम् १५।८ । इष्टिः । सर्वाथिसिद्धियोगः १।४२ च. । यायीज्यय योगः १।४२ या० ।  
अशून्यशायनव्रतम् ।  
मं ४४।० ( रा. ११।० ) उ० ।  
मं १६।५० ( दि. १२।९ ) या० । मधासुसिहे च बुधः ५५।२० । संकष्ट ४ । वं. उ० वं. ९ मि. १२ ।  
मार्या गुरुः १७।२५ । स्वायीज्यय योगः २२।१० या० । G सितरात्रि १४ व्रतम् । महासिद्धियोगः  
१४।३० उ० । यायीज्यययोगः १० या० ।  
धूम्र योगः ।  
मं ३०।० ( दि. ५।२६ ) उ० । सर्वाथिसिद्धियोगः ४।४८ उ० ।  
मं ११।२ ( प्रा० ५।४५ ) या० । अग्रस्त ८ । यायीज्यय योगः ११।५८ या० ।  
काल द. । सर्वाथिसिद्धियोगः ५३।२० उ० ।  
मं ५१।१२ ( प्रा० ५।७ उ० ) । आश्लेषास्वर्काः ११।२० (दि० १।३९) । रकी पु० योगः । A  
मं २७।१३ ( दि. ४।११ ) या० ।  
कामिका ११ व्रतं सर्वेपायम् ।  
पूर्व फाल्गुन्योधुधः ३।२० । प्रदीप १६ । व्रतम् शनि प्रदीपः ।  
म. ७० ( दि ८।१० ) उ० ३२।३४ ( मा० ६।३६ ) या० । G  
दर्शः । दीप पूजा । सर्वाथिसिद्ध योगः २७।८ या० ।

A वाहनमविः । उपवासार्थं भोजनं न करे विना  
नयनादी । सम्मान्य शक्तिः । भोजनं न करे विना ।  
मं नि० १६।४८ । मा. तिमिरा । ज्ञानं ७।४८  
उ० । घटी शुक्रः १३ । मा. तिमिरा ।  
५३।३९ ।

शक्तः पञ्चिभागाय ।

श्रावण कृष्ण चौमे अयनांशः २३।३७।२३

[illegible]

॥ दैनिक लग्नसारिणी (स्टण्डर्ड टाइम) ॥

ता. १०८२ रु. ६० गो  
 रु. १०८२ रु. ५० क.  
 न. ह्ये. अ. वि. पं. १९  
 मि. १९ पर।  
 ता. १०८३ रु. ६० गो  
 रु. १०८३ रु. ५० क.  
 न. ह्ये. अ. वि. पं. ५  
 मि. १९ पर।







































































1977

[illegible]



वरस्य नक्षत्राणि

गुणैक्यज्ञानप्रकारः—ऊर्ध्वपरिस्थान्यपि भानि पुंसां ॥ १० ॥ यथा  
वधूनाम् ॥ संपातकोष्ठे ह्युभयोर्गुणैश्च सर्वं शुभं तद्व्युत्तितो १८ भिक्क यत् ॥  
उवाहरणम्—गणपतिस्तरस्वयोर्गणनाविचारः शतपदचक्रमुत्तारेण गणपति-  
श्रद्धां यतिना सरस्वतीश्रद्धां शतशतका, उभयोः संपातकोष्ठे गुणैश्च २५ अर्ह्यहर्ष-  
गुणैश्च शुभम् ॥ इति राखेयैः वेद्विज्जमुत्तं ह्योऽस्याप्रज्ञवैश्ये राखिगुणं तथैव ॥  
नाडीरोगो नो गणना च रोगो नक्षत्रैश्च पादभेदे शुभं स्यात् ॥ इत्यादिविचारः ॥  
अथ हीनवर्णपरिहारः—हीनवर्णा यदा राखि राखीनो वर्ण उत्तम ॥ तदा  
राखीश्वरो याष्टुस्तदाखि नैव चिन्तयेत् ॥ इति ॥  
अथ दुष्टगुणपरिहारः—अथि—एकयोनिषु संपत्त्यो दंपत्योः संगमः  
सदा ॥ भिद्योनिषु अथ रयादरिप्रायो न चेत्तयोः ॥ योनैरभवे नोहाह कृते  
सति विनोदः ॥ राखित्वं च यथासि पादयेस तु दोषभाक् ॥ एकयोनिषु कलहो  
गजयोः विहयो नूनो ॥ महद्वेत्स समता महिषस्य कपेत्तया ॥ सङ्गृह्ये योनिवैरं  
मृष्युद च परित्यजेत् ॥ तत्र वेद्विज्जमुत्तं सत्त्वं नातिवृष्टं विद्विषाः ॥ योनिवैरं  
तत्र त्याज्यं सोऽप्योभिन्नविगयो ॥ एकविज्जमुत्तं प्रोक्तं मध्यमं नातिदोषदम् ॥  
सति तदाविष्टोऽपि योनिवैरं न दोषकृत् ॥ यदि रयादरिप्रायोः पुंसो योनिवै-  
रं लोच्यते ॥ इति ॥  
अथ ग्रहमैत्रापरिहारः—यसिष्ठ—दिवादीदो या नृपवंशे वा षड्काष्ठे  
राखनयोचितो वा ॥ एकादिस्यो भवनेशमैत्र्या शुभाय पाणिग्रहणं विधेयम् ॥  
शौनकाः—यवैरं योनिवैरं गणवैरं नृपस्यम् ॥ दुष्टकृतफलं सर्वे ग्रहमैत्र्या च  
नश्यति ॥ यथेष्टगोमयो भावो दंपत्यास्तारो भवेत् ॥ दुष्टकृतं शुभं मैत्र्या  
सङ्गृह्येति शब्दते ॥  
अथ गणकृतपरिहारः—केशवः—रशोगनो यदि नरो नृगणा कुमारी सदा  
शिङ्गृतसममैत्र्यायोनिमुद्रि ॥ यदासि तत्र शुभदं करणीजनं च वामभुजां सङ्गृ-  
यदा न हि नास्ति ॥ सङ्गृह्ये योनिशुद्धिर्द्वयस्य गुणयम् ॥ एतेकतमसङ्गृह्ये  
नारीरशोगना शुभा ॥ इति ॥  
अथ दुष्टकृतपरिहारः—राखिनाथे पिष्टोऽपि पिष्टत्वे वांशनायको ॥  
विवाहो कारयेद्विमानं दंपत्यो सोऽथवर्जनम् ॥  
अथ नाडोपरिहारः, नारदः—युतनीदी त्वह्मत्वावो पंचको पंचनायको ॥  
विनाडी सर्वदेसु त्वनीया प्रवर्तते ॥ इति ॥  
अथ वरवरणम्—पूर्वापितयगमन्येयमुत्तरात्रितयं तथा ॥ रोहिणी तत्र वर-  
कन्याघाता द्विजोभवा ॥ वरस्य वरणं कुमारीपरायने विधोर्वैरं ॥ शुभकोमे  
सुलक्ष्णे च विवाहोर्व न रिक्तमे ॥  
अथ कन्यावरणम्—पर्वमपि श्रवणमित्रभैरवैरुद्वेहोत्तसातवातवसमीरवदेव-  
तेषु ॥ द्राक्षाकलेमुकुमुमाशतपूर्णपाणिस्थानांशतहृदयो वरयेत्सुमारीम् ॥  
अथ वाग्दानोत्तरं वरमरणे विशेषः—अङ्गिवांवा च दत्तायो त्रियेतोर्व  
वरो यदि ॥ न च पत्नीपत्नीता स्वास्तुमारी पितुरेव सा ॥  
देशान्तरगमने तु कथायाचनः—वरयित्वा तु यः कश्चित्प्रकसेत्पुत्रो यदा ॥  
अथवागमालीनीतीत्य कन्याय्य वरयेत्सतिम् ॥  
याज्ञवल्क्यः—दत्तामपि हरेत्पूर्वाच्छेयांश्च वरं ज्ञात्वात्ते ॥  
—कुललोउविहोतस्य वडादिवतितस्य च ॥ अपस्तम्बो विधेमपि  
—विधेमपि ॥ दत्तामपि द्वैरक्यां सगोत्रोडा तथैव सा ॥

[illegible]



अथ जन्मकालादीर्घादि ३ भेदानामत्रचरादिराशिवशादायुर्वीधिक-  
चक्रमिदम् ।

दीर्घायुः	मध्यायुः	अल्पायुः
चरमे १ लग्नेशः चरमे १ अष्टमेशः	चरमे १ लग्नेशः स्थिरमे २ अष्टमेशः	चरमे १ लग्नेशः द्विस्वभावमे ३ रन्ध्रेशः
दीर्घायुः ॥	मध्यायुः ॥	अल्पायुः ॥
स्थिरमे २ लग्नेशः द्विदेहमे ३ अष्टमेशः	स्थिरमे २ लग्नेशः चरमे १ रन्ध्रेशः	स्थिरमे २ लग्नेशः स्थिरमे २ रन्ध्रेशः
दीर्घायुः ॥	मध्यायुः ॥	अल्पायुः ॥
द्विदेहमे ३ लग्नेशः स्थिरमे २ अष्टमेशः	द्विदेहमे ३ लग्नेशः द्विदेहमे ३ रन्ध्रेशः	द्विदेहमे ३ लग्नेशः चरमे १ रन्ध्रेशः

[illegible]

शारभुदाहरणम् । कस्यचिज्जगत्प्रभम् ५५५५५ जगत्प्रभम् १५५५५३१३ होरा  
 लग्नम् ५५५५५१३ लनेश वनि १११११५५५३१ अष्टमोक्तम् १०५५५३१  
 चन्द्रः ७५५३१५११ । अत्र जगत्प्रभामुलनेशभावा दीर्घाव । कित्तव गति-  
 योगकर्तृ स्वामध्यायुः । लग्नचन्द्राभ्या मध्यायुः । लहोराश्याभ्यामत्यायुः ।  
 एवमत्र मध्यायुः प्रमाणनिबद्धम् । अत्र वनिमुद्योराशयोक्तम् ११५५५३१२  
 अंशाभा वर्षादिकम् १११५१२८ कलना मासादि १११५११२ विलाना  
 दिनादि १११५१२८ तेषामैकैकपचितस्थानयोगाद्वर्षादि १११५११११२८  
 मध्यायुनि १५८ तत् । शुद्ध स्पष्टमायुषोवर्षादिकम् ५०१११२८१२८ एवमेव लग्न  
 चन्द्राभ्या मन्त्रचन्द्राभाया, जगत्प्रहोराश्याभ्या पूर्वोक्ता दिवा काया । अत्र  
 उभाभ्या योगस्तथा द्वयोर्मोधाध्यायुः । हाभ्यां दिकाभ्यामायुनिर्णय तु ननुषां  
 योगस्य चतुर्थाभायुः । त्रिभिद्विकैरायुनिर्णवे पञ्चा योगस्य चतुर्थाभायुः ।  
 एवमत्रायुनिर्णय एवोभ्यामायुः कृत्वास्त्येकाकाशकयहाशादिवशात् । एवं मन्त्र-  
 चन्द्राभ्यामन्यस्य सप्तस्यायुनिर्णयः भवति बहोरो भेदाः, यितुर्तिभयायुः  
 लिखिता अपि बुद्धिर्माद्भगैकवरेभ्यस्त्विकपरा शिरेरनुचितनीया इति ।

अथात्र जैमिनीयसूत्रोक्तायुःसाधने अशफलज्ञानं विज्ञेयम् ॥

अथाः	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५
वर्षं	३२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५
मास	०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
दिन	०	२४	१८	२२	६	०	२४	१८	२२	६	०	२४	१८	२२	६	०	२४	१८	२२	६	०	२४	१८	२२	६	०

— वाचस्पत्ययनाचार्य उवाच —  
 अथ श्रीमद्भगवानुवाच ॥

अथात्र जैमिनीयसूत्रोक्तायुःसाधने कलाफलज्ञानाय सारणीयम् ।

[illegible]

अथात्र जैमिनीयसूत्रोक्तायुःसाधने विकलाफलसारणीयम् ॥

[illegible]

॥ १० ॥ मातृस्थानाय स्थानयोजनमाह—अष्टमं तृतीयञ्च लघादायुःकदाहृतम् ॥ द्वितीयं सप्तमस्थानं मारकस्थानमुच्यते

चिद्विद्यारोगेश्वरशास्त्रेणैव । परमपराशर्यमेवोदात्तं शास्त्रम् । मारकसम्भवः । मारके मारकांतरांतरं  
भोजनम् । व्यभिक्तितीक्ष्णौ सम्बन्धतः फलप्रदौ । लघ्वेयदशाऽनिष्टदसाब्धेरुद्दिता नृणां रोगकारिणी ॥ कश्चित्तु भगवान्  
शास्त्रेष्वमेव दशायु च । कैवलानां च पापानां दशायु निधनं कश्चित् ॥ पृष्ठाष्टमव्याख्यानं राहुः केतुस्तथैव च । एषां  
शमलवयः सोपि भारकवद्धवेत् ॥

अथ चरकारकाः—सर्वेभ्योऽपि स्फुटग्रहेभ्यो राशि विहाय योऽधिकशः स अन्तराकारकः, तदल्पोऽमात्यस्ततः क्रमात् पित्रोः पत्न्यस्य शतदेवाराणां कारका भवन्ति ।

अथ होराप्रधानयन्म—दिष्ट्याह्वाः पञ्चाता म शेष च पलोकृतम्	रातः वामिः	कर्मजः विनाः	होरा-घटी-प्रधानाप्रधानयन्म—
होराप्रधानम् । 'विषयऽङ्के रवौ योग्य समेऽङ्के लग्नादिपु' इति केषा चिन्मा	विपुत्रः सुलभः	व्याधि- भयमि	होरा-घटी-प्रधानाप्रधानयन्म—
योग्येष्टकाले नयनामृताशुभि (१२) धर्तक (६) नभोवह्निमि (३०) राहो	विपुत्रः सुलभः	व्याधि- भयमि	होरा-घटी-प्रधानाप्रधानयन्म—
मविततनुर्धृतितनु ॥ स्योदये लख जन्मभाव-होरा-घटीलग्नादि	विपुत्रः सुलभः	व्याधि- भयमि	होरा-घटी-प्रधानाप्रधानयन्म—
यस्यालग्नात्मा स्योदयात्तद्वृत्तिरसमाप्त्यारुहणा गुक्तिसङ्गता	विपुत्रः सुलभः	व्याधि- भयमि	होरा-घटी-प्रधानाप्रधानयन्म—
भावलघु घटीलग्नयोरेपि तादृक्त्वं परमत्र दृढवाक्यादोलोराप्रधाने	विपुत्रः सुलभः	व्याधि- भयमि	होरा-घटी-प्रधानाप्रधानयन्म—

10

अथ प्रहाणां विशोत्तरीयमहादशान्तदंशाविज्ञानार्थं चक्रम्

सूयंदशावर्ष ६	चंद्रदशावर्ष १०	भीमदशावर्ष ७	राहुदशावर्ष १८	गुरुदशावर्ष १६	शुक्रदशावर्ष १२	केतुदशावर्ष ७	उल्कादशावर्ष २०
कृ. उ. फा. उ. पा.	रोहि. ह. ज्यलण	मृ. वि. च.	आश्रं स्वा. शत.	पुन. वि. पू. मा.	पुष्य. अ. उ. मा.	आस्ते. ज्ये. रे.	मघा. मृ. आशि.
अन्तर्दशा	अन्तर्वर्षा	अन्तर्दशा	अन्तर्दशा	अन्तर्दशा	अन्तर्दशा	अन्तर्दशा	अन्तर्दशा

[illegible]

अथ योगिनीदशाऽन्तर्दशयोर्ज्ञानार्थं चक्रमिदम्

मंगल १	पिंगल २	पुन्या ३	आमरी ४	अदिका ५	उल्ला ६	सिदा ७	सङ्कटा ८
मा १२३. मं. ०१०. पि. ०२०. पा. १००. आ ११०. मं. १२०. उ २००. सि १२०. स. २१०.	मा २४३. मं. ०२०. पि. ०२०. पा. २००. आ २१०. मं. २२०. उ ३००. सि २२०. स. ३१०.	मा ३६३. मं. ०३०. पि. ०३०. पा. ३००. आ ३१०. मं. ३२०. उ ४००. सि ३२०. स. ४१०.	मा ४८३. मं. ०४०. पि. ०४०. पा. ४००. आ ४१०. मं. ४२०. उ ५००. सि ४२०. स. ५१०.	मा ६०३. मं. ०५०. पि. ०५०. पा. ५००. आ ६१०. मं. ६२०. उ ६००. सि ६२०. स. ६१०.	मा ७२३. मं. ०६०. पि. ०६०. पा. ६००. आ ७१०. मं. ७२०. उ ७००. सि ७२०. स. ७१०.	मा ८४३. मं. ०७०. पि. ०७०. पा. ८००. आ ८१०. मं. ८२०. उ ८००. सि ८२०. स. ८१०.	मा ९६३. मं. ०८०. पि. ०८०. पा. ९००. आ ९१०. मं. ९२०. उ ९००. सि ९२०. स. ९१०.

पितृला परममानदारिणी । यावाहितिवादाकारिका जनिमानिबलकाधारिका ॥ धान्यादाकाफलम् — अरावेरलाय वनयतिप्रवृत्त वसितय  
जनानामाभिन्ना विवर्णमरिवादे तनुप्रताम् ॥ वन भाग्ये घन्या तवगतकषीभोगयतल दशोबुद्धि विधि । तुमाम्भयलक्ष्मणमिके ॥ भामरीदाकाफलम् —  
गति दूरेऽवश्य कवितय भयेन विवर्णता रति दूरेविरेरि कलिभिधान जनिमानम् ॥ अरावेरलाय वनयतिप्रवृत्त वसितय  
मिबलकाधारिकाफलम् ॥ भद्रिकादाकाफलम् — अरावेरलाय वनयतिप्रवृत्त वसितय  
मिबलकाधारिकाफलम् ॥ यशो नद्र भद्रा विवर्तति समुद्रावधि मृशम् ॥ उन्नादाकाफलम् — जनानामाभिन्ना कल्यति विवादे वलनता कलप्राज्ञे कल  
तनयतनयान्द्रि सततम् । चकलं विवितानामिबलकाधारिका विवर्तते प्राविशति ॥ सिद्धादाकाफलम् —

● उदारत्वं विद्या बभूवति महायोगमनितां तुरहाख्ये स्थापयन्त्यस्तथावाचते । सुखं त्वयोद्युः शृङ्खलानानाविधैः कृत्स्नं पाण्डित्यं विबुधैः समुत्तरं तनुताम् ॥ सङ्कटदसाक्षयम्—प्राप्तत्वं कथा कथयति तुष्यन्तव्यापारं ॥ अत्र च त्वं मां प्रसन्नयस्व प्रोक्तमन्तम् । कृत्यापानमनादिदुःखस्योपशमं विबोधिनिवारं सन्तारमप्यसन्तर्भाति गुणवताम् ॥ इति ॥



गतवर्ष	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
वार	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
घटी	१५	३०	४५	६०	७५	९०	१०५	१२०	१३५	१५०	१६५	१८०	१९५	२१०	२२५	२४०	२५५	२७०	२८५	३००	३१५	३३०	३४५	३६०	३७५	३९०	४०५	४२०	४३५	४५०	
पल	२२	४४	६६	८८	११०	१३२	१५४	१७६	१९८	२२०	२४२	२६४	२८६	३०८	३३०	३५२	३७४	३९६	४१८	४४०	४६२	४८४	५०६	५२८	५५०	५७२	५९४	६१६	६३८	६६०	
विपल	५७	५५	५२	५०	४७	४५	४२	४०	३७	३५	३२	३०	२७	२५	२२	२०	१७	१५	१२	१०	७	५	३	१	०	५७	५५	५२	५०	४७	४५
गतवर्ष	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
वार	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	
घटी	५६	१२	२७	४३	५८	७३	८८	१०३	११८	१३३	१४८	१६३	१७८	१९३	२०८	२२३	२३८	२५३	२६८	२८३	२९८	३१३	३२८	३४३	३५८	३७३	३८८	४०३	४१८	४३३	
पल	५१	१४	३७	६०	८३	१०६	१२९	१५२	१७५	१९८	२२१	२४४	२६७	२९०	३१३	३३६	३५९	३८२	४०५	४२८	४५१	४७४	४९७	५२०	५४३	५६६	५८९	६१२	६३५	६५८	
विपल	४२	४०	३७	३५	३२	३०	२७	२५	२२	२०	१७	१५	१२	१०	७	५	३	१	०	५७	५५	५२	५०	४७	४५	४२	४०	३७	३५	३२	
गतवर्ष	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	
वार	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	
घटी	३८	५३	६८	८३	९८	११३	१२८	१४३	१५८	१७३	१८८	२०३	२१८	२३३	२४८	२६३	२७८	२९३	३०८	३२३	३३८	३५३	३६८	३८३	३९८	४१३	४२८	४४३	४५८	४७३	
पल	२०	४३	६६	८९	११२	१३५	१५८	१८१	२०४	२२७	२५०	२७३	२९६	३१९	३४२	३६५	३८८	४११	४३४	४५७	४८										

सूर्यः	केशवः चिन्ता च	शोकः वृ- पात्रादिति:	परलक्ष्मी धनलाभः	हानिः पीडाभयं	रोगभयं पुत्रनाशः	सौख्यम् शत्रुनाशः	स्त्रीकष्टं पीडाभयम्	शोककष्टा- दिभयम्	धर्मदृढिः राज्यप्रदः	सुलासिः राज्यपतिः	सुलाय- लाभः	उदगः पीडा च
चन्द्रः	कफज्वरः पीडा	नेत्रपीडा घनप्राप्तिः	घनप्राप्तिः दृष्यश्च	सुखं शत्रुनाशः	सुखं सुमतिश्च	अन्नपीडा व्ययः	ज्वरतिः भयम्	विविध- कष्टभयम्	पुण्योदयः धनागमः	सुकर्मं जयातिः	यशोर्थः लाभः	वयः नेत्रपीडा
भीमः	वातार्तिः व्रणश्च	हृशोरक्तः चिन्ताभाः	नेरुज्यं द्रव्यक्षामः	व्यसनं रुग्भयम्	पुत्रार्तिः दुर्मतिः	सुखं शत्रुनाशः	स्त्रीनाशः कष्टम्	ज्वरार्तिः व्रणाश्च	पुण्योदयः धनसिः	राज्यार्थ- लाभः	धनादि- लाभः	विरोधः कर्णपीडा
बुधः	सौख्यम् सामान्यः	द्वयार्तिः सामान्यः	सुखं सामान्यः	सुखं दृष्ट्यलाभः	पुत्रचित्त- सुखार्तिः	रोगभयं कष्टभयं	धनागमः सुखम्	व्यमता कफार्तिः	धनः कीर्त्यतिः	मानसुखा- दिलाभः	सुखं जयातिः	शत्रुरोगा दिभयं

गुरुः	सुख्य- शोधलाभः	कीर्तिप- नादिलाभः	जयः शौक्यश्च	वाहन भ्रमतिःसुखं	पुत्रातिः सुखश्च	शत्रुरोगा- दिभयम्	सुखम् विज्ञप्तातिः	कठिन- रूपयम्	सुखं भा- ग्यादिदृष्ट्	राखाथ- लाभः	सुताप- लाभः	शोकादि- दिभयं
शुक्रः	सुमानः धनलाभः	धनातीरा- ध्यसुखम्	कीर्तिवृद्धिः अथांगमः	सुखार्थ- लाभः	धनागमः सुखम्	रिपोर्भातिः कष्टम्	कल- सौख्य	ज्वरपीडा- दिभयम्	धर्म- धनागमः	मानजया- दिलाभः	क्षेगार्थ- लाभः	व्ययः नो लाभः
शनिः	रिपोर्भयम् वातार्तिः	पीडाभय विरोधः	धनातिः जयश्च	सुखार्थ- नाशःकष्टं	सुतहानिः पीडा च	धनातिः भ्रमिनाशः	क्षीकृष्ट कलिः	दुःखरोगा- दिभयम्	भाग्यवृद्धिः शत्रुनाशः	धनहानिः पीडाभयं	धनातिः पुत्रातिः	क्लेशः विन्ता च
राहुः	शिरोर्तिः कलहः	ऋषभयं पीडा च	शत्रुनाशः शुभश्च	वातार्तिः दुःखश्च	वुद्धिनाशः अनो	रिपुक्षयः अरोग्यम्	पीडाभयं धनक्षयः	धनक्षयः रुग्भयम्	धनधर्म- वृद्धिः	वाहननाश जयः	विपुत्रः सुलाभः	व्याधि- भयम्
केतुः	पीडाभयं	क्लेशः	आरोग्यं	कष्टं	पीडाभयं	सुखं	क्लेशः रुक् च	ज्वरपीडा- दिभयम्	भाग्य- यशोर्भयः	कीर्त्यर्थ- लाभः	सुखार्थ- सुललाभः	शोकादि- भयम्

मृत्था	सौख्यम्	सुपराः	कार्यं पुष्टिः	अंगपीडा	सुबुद्धिः	रोगभयं	रोगभयं	तुर्व्यसनम्	भाग्योदयः	राज्यसुखं	पमाय-	सुव्यग-
पुष्टुनाशः	अर्थगमः	चनम्	दुःखश	सुखानि	अर्थनाशः	व्यसनम्	रोगभयम्	भाग्यनाशः	राज्यदोषः	पमाय-	सुव्यग-	

त्रिपताकिके ग्रन्थानामनुसंधा गतावस्थया  
या विभक्ता नवमस्ततः । रोधाके बन्धनि गताब्धद्रा-  
रोरिमं न्यसेत् ॥ रोधग्रहाब्धक्रमेणरोधस्यायुः कल्पसेत् ॥  
त्रिपताके वर्षकल्पमदो तत्र विपुर्वदा ॥ ध्रुवैर्विदः  
शुभफलं पापैः पापफलप्रद इति ॥

अथात्र त्रिराक्षिपाः ।													
जग्रा	मे	रु	मि	क	सि	कं	तं	तु	वृ	ध	मं	कुं	मी
दिवा	र	शु	श	रु	तं	तु	वृ	ध	मं	कुं	मी	राशय	
राशौ	रु	च	र	व	र	च	र	व	र	च	र	व	राशय
अथ होराचक्रमिदम् ।													
मे	रु	मि	क	सि	कं	तं	तु	वृ	ध	मं	कुं	मी	राशय
५	४	५	४	५	४	५	४	५	४	५	४	५	राशयः
र	च	र	व	र	च	र	व	र	च	र	व	र	१५
व	र	च	र	व	र	च	र	व	र	च	र	व	१५

[illegible][illegible][illegible]



## सीतामाधुर्यदर्शने श्रेष्ठमासादयः ।

श्रेष्ठमासाः	वैशाख, ज्येष्ठ, आश्विन, मार्गशीर्ष, माघ, फाल्गुन ।
" पक्षः	शुक्लः ।
" तिथयः	१।२।३।५।७।१०।११।१३।१५
" नारायणः	चन्द्र बुध, गुरु, शुक्र ।
" नक्षत्राणि	अभि., रो., घ., पुष्य, उत्तरा ३, ह., चि., स्वा., अनु., म्र., घ., म., रे ।
" लग्नाणि	२।३।४।५।७।९।१२ शुभं दंष्ट्र ।

## श्रुतमत्याः ज्ञानमुहूर्तविचारः ।

श्रेष्ठनक्षत्राणि	अ., रो., म., उत्तरा ३, ह., स्वा., अनु., ज्ये., घ., शुभतिथी, सहाय, सत्तनी ।
-------------------	--

## गर्भाधानमुहूर्तविचारः ।

रो., म., उत्तरा ३, ह., स्वा., अनु., म., घ., म., एतु भेषु ।	
लग्ना १।४।५।७।९।१०। शुभैः ।	
लग्ना ३।९।११ पापैः ।	
२. म., घ., ज्येष्ठलने विषमराशिनवांशके चंद्रे शुभम् ।	
६।८।१०।१२ (गुण) रात्री गर्भाधानं शुभम् ।	
अ., पुन., पुष्य, चि., एतु भेषु मध्यमम् ।	

निजिचं पण्डितम्, निधनताराम्, जन्मताराम्, अश्वि., म., म., म., रे ।	
पह्णदिनम्, वैवृतिः, अतीपात्रः, पित्रोः श्राद्धदिनम्, परिषद्विदं, उत्पात- हस्तनक्षत्रम्, जन्मराशिः अष्टमं, पापग्रहभवनम् भद्रापूर्वदिनादि, ५।९।११ तिथिषु, संध्यायाम्, र.मं.व. वासरात् रजोदलनाच्चतुर्थ- रात्रिपर्यंतं शयनकालं गर्भाधानं सत्तयात् ।	

## पुंसवनसीमन्तयोर्मुहूर्तविचारः ।

शुभतिथयः—१।२।३।५।७।१०।११।१३। पूर्वाह्ने शुभवारा—र., म., गु., वा. चं., घु. । चन्द्रताराशुद्धौ शुभनक्षत्राणि—रो., म., पुन., पुष्य, उत्तरा ३, ह., म., म., रे. लग्नादिः—लग्ना १।४।५।७।९।१० एतु शुभैः । " ३।६।११ " पापैः चन्द्रे १।४।८।१२ चन्द्रे भेष्टम् । ५।८।१२ पक्षपूर्वकोषवत् । संस्कारहयं पुण्यग्रहलने नवावे च श्रेष्ठम् ।	
--	--

## सूतिकायाः सूतिग्रहप्रवेशमुहूर्तविचारः ।

तिथयः—रिक्ता ( ४।९।१४ ) ६ ८ वज्रिताः ।	
वारा—चं., घु., गु., शु. ।	
नक्षत्राणि—अ., रो., म., पुन., घु., उत्तरा ३, ह., चि., स्वा., अनु. म्र., घ., म., रे ।	
लग्नाणि—शुभे लग्ने, लग्नतः १।४।७।१० स्वावेषु शुभेषु । ३।६।११ पापेषु । शुभांशे तसि उत्तमः ।	

## कालातिक्रमणे जातकर्ममुहूर्तविचारः ।

सतिथयः—१।२।३।५।७।९।१०।११।१२।१३।	
सहारा—चं., घु., गु., शु. ।	
नक्षत्राणि—अ., रो., म., पुन., पुष्य, उत्तरा ३, ह., चि., स्वा., अनु. म्र., घ., म., रे ।	
संश्रान्तिभद्राव्यतिपातादिदोषरहिताम् शुभतिथिषु । जन्मदिनादेकादशद्वादशपञ्चदशदिनयोः सत्तनी चायं शुभः ।	

## स्नानपानमुहूर्तविचारः ।

शुभतिथी, अ., रो., म., पुन., घु., उत्तरा ३, ह., चं., अनु., म्र., घ., म., रे. एतु भेषु शिवरत्नने स्नानपानं शुभं स्यात् ।	
--	--

## चैत्रादिद्वादशमासनामानि ।

मासाः	वै.	श्रै.	ज्ये.	आ.	श्रा.	मा.	आश्वि.	काति.	मार्ग.	पो.	मृ.	का.
नामानि	वैकुण्ठः	जान्तेन	जेष्ठः	वसुधैव	वसुधैव	वसुधैव	वसुधैव	वसुधैव	वसुधैव	वसुधैव	वसुधैव	वसुधैव

## बालकस्य खट्वाहोममुहूर्तविचारः ।

जन्मदिनात् १०।१२।१५।२२ एतु दनेषु ।	
अश्वि., रो., म., पुष्य, उत्तरा ३, ह., चि., अनु., अभि., रे, एतु नक्षत्रेषु रिक्ताया ( ४।९।१४।३० ) रहिततिथी प्राक्कीर्णं वातकं तत्र विन्यसेत् ।	

## सूतीकानामुहूर्तविचारः ।

सतिथयः—१।२।३।५।७।९।१०।११।१५।	
सहारा—र., म., गु. ।	
नक्षत्राणि—अभि., रो., म., उत्तरा ३, ह., स्वा.	

अथ रोगार्तस्येष्टकालवशाद्वाधाज्ञानम् । तिथिवारश्च नक्षत्र लग्न वामश्च सधुतम् । वसुभिस्तु हरेद्भागं वीरे नाया निबोधयत् ॥ हरे ३ प्रो ३ देवतायां स्यात् पितृणां नक्षत्राणि २५ ॥  
पञ्चमितीति वावा ६४ ग्रहाणामेकपञ्चके १५ ॥ भक्ते द्वादशमि जेने जीवन मरण वदेत् ॥ रामबाणा रसाष्टौ न नरकदात्र ( ३५।३६।३७।३८ ) जीवति एक १ पयो २ गुण ३ सप्त ४ दश ५  
६ ७ ८ ९ १० जीवति ॥ अन्यदपि राजभास्ते ॥ वारश्च तिथिदिनापरिमितं संयोज्य नागभेजेष्टकालेन फलं च नाग ८ नने २ दीपं पितृनां नया । सन्ने ७ राममिने ३ मृत्युं विविति ३०  
६ ७ ८ ९ १० तया प्रेक्षयामि च क्षेत्रस्य विदितं चन्द्रे च वाणाधिके ॥ लब्धाङ्कं वि ३ गुण नया वसुधुतं देहेन गुण्य ततः समाप्यधिकं तया विमुक्तिं कोत्येव शेष वदेत् । साम्, कर्मभवनं च शत्रु-  
कुलं च स्मृत्तुं पञ्चिजं शुभे ज्योमभव तत्वाश्च विविधोपायैश्च गान्ति वदेत् ॥ कोत्य होमदिवाचने शुभकरं वामं चतुर्कोणे होमं तन्मन्त्रेणैव विरचयन्मन्त्रेण वदन्तं वा ॥ रात्रौ होमं वदे-  
नवाप्यारुह्यै चर्त्ताक्रवादानतो गायत्र्योक्तं हि पञ्चविधये चाकाशजो दीपतः ॥ सर्पदर्शने भेषजम् । गोमूत्रेन मूत्रैर्वा पुराणं पूतेन वा । हारिद्रापातमात्रेण विन हस्ति भगवत् ॥ दत्तव्यं वापि  
पुराणमिति कथ्यते । गोक्षीरे रजनीकाय पितृत्वं विपापहम् ॥

नक्षत्राणां स्वामिभ्योऽनुभादिविधेः पञ्चसंज्ञा					नक्षत्रस्य पादचशाच कष्टावलीकनचक्रम्					नक्षत्रसंज्ञानाथ सन्तो चलाविस्ताराः						
नक्षत्राणि	स्वामिनः	शुभाशुभ	जातिव्य.	संज्ञा	मुक्तम्	च. उ.	यावदोहम्	ज्वरादरोगावतो	अथ भयं पादचशाच दिनसंज्ञा	मन्त्रा	न. वस्तु	आमोक्षणं	वा. वा.	अथ चलाविस्ताराः		
अश्विनी	अश्वनीकु.	शुभम्	वैश्यः	ल. लि.	तिथ्यं	२०	तिलतण्डुल	द. स.	दानाद	१२१२०२००	मुमुक्षुजमरवजपः	मन्द	५	यत्नलाभ	२	अथ चलाविस्ताराः
भरणी	भरणीकु.	शुभम्	वैश्यः	ल. लि.	तिथ्यं	२४	सालतण्डुल	द. ११	भोजन	१२१२०२००	मुमुक्षुजमरवजपः	मध्य	५	यत्नलाभ	२	अथ चलाविस्ताराः
कृत्तिका	कृत्तिकाकु.	शुभम्	वैश्यः	ल. लि.	तिथ्यं	२०	गन्धम	द. १	स्वर्णदानं	१२१२०२००	अग्निपूजं विमिश्र	मुलोचन	३	अलाभ	६	अथ चलाविस्ताराः
रोहिणी	रोहिणीकु.	शुभम्	वैश्यः	ल. लि.	तिथ्यं	२४	गन्धम	द. ७	पुनदान	७ १२२३०	ब्रह्मपूजेतिमंत्रः	अश्व	५	यत्नलाभ	२	अथ चलाविस्ताराः
मृगशिरा	मृगशिराकु.	शुभम्	वैश्यः	ल. लि.	तिथ्यं	२४	गन्धम	द. १	तिलदान	१ ५ ७१०	इमं देवेतिमंत्रः	मन्द	५	यत्नलाभ	२	अथ चलाविस्ताराः
आर्द्रा	आर्द्राकु.	शुभम्	वैश्यः	ल. लि.	तिथ्यं	२४	गन्धम	द. ७	पुनदान	७ १२२३०	नमस्तेऽन्नमंत्रः	मध्य	५	यत्नलाभ	२	अथ चलाविस्ताराः
पुनर्वसु	पुनर्वसुकु.	शुभम्	वैश्यः	ल. लि.	तिथ्यं	२०	गन्धम	द. ७	पुनदान	७ १२२३०	अदितिमंत्रः	मुलोचन	३	अलाभ	६	अथ चलाविस्ताराः
पुष्य	पुष्यकु.	शुभम्	वैश्यः	ल. लि.	तिथ्यं	२०	गन्धम	द. ७	पुनदान	७ १२२३०	बृहस्पतेतिमंत्रः	अश्व	५	यत्नलाभ	२	अथ चलाविस्ताराः
आश्लेषा	आश्लेषाकु.	शुभम्	वैश्यः	ल. लि.	तिथ्यं	२०	गन्धम	द. ७	पुनदान	७ १२२३०	नमोऽन्नमंत्रः	मन्द	५	यत्नलाभ	२	अथ चलाविस्ताराः
मघा	मघाकु.	शुभम्	वैश्यः	ल. लि.	तिथ्यं	२०	गन्धम	द. ७	पुनदान	७ १२२३०	पितृस्वदेतिमंत्रः	मुलोचन	३	अलाभ	६	अथ चलाविस्ताराः
पूर्वाषाढा	पूर्वाषाढाकु.	शुभम्	वैश्यः	ल. लि.	तिथ्यं	२४	गन्धम	द. ७	पुनदान	७ १२२३०	अग्निपूजेतिमंत्रः	अश्व	५	यत्नलाभ	२	अथ चलाविस्ताराः
उ. का.	उ. का.कु.	शुभम्	वैश्यः	ल. लि.	तिथ्यं	२४	गन्धम	द. ७	पुनदान	७ १२२३०	अग्निपूजेतिमंत्रः	मध्य	५	यत्नलाभ	२	अथ चलाविस्ताराः
हस्त	हस्तकु.	शुभम्	वैश्यः	ल. लि.	तिथ्यं	२४	गन्धम	द. ७	पुनदान	७ १२२३०	अग्निपूजेतिमंत्रः	मुलोचन	३	अलाभ	६	अथ चलाविस्ताराः
चित्रा	चित्राकु.	शुभम्	वैश्यः	ल. लि.	तिथ्यं	२४	गन्धम	द. ७	पुनदान	७ १२२३०	अग्निपूजेतिमंत्रः	अश्व	५	यत्नलाभ	२	अथ चलाविस्ताराः
स्वाती	स्वातीकु.	शुभम्	वैश्यः	ल. लि.	तिथ्यं	२४	गन्धम	द. ७	पुनदान	७ १२२३०	अग्निपूजेतिमंत्रः	मध्य	५	यत्नलाभ	२	अथ चलाविस्ताराः
विशाखा	विशाखाकु.	शुभम्	वैश्यः	ल. लि.	तिथ्यं	२४	गन्धम	द. ७	पुनदान	७ १२२३०	अग्निपूजेतिमंत्रः	मुलोचन	३	अलाभ	६	अथ चलाविस्ताराः
अनुराधा	अनुराधाकु.	शुभम्	वैश्यः	ल. लि.	तिथ्यं	२४	गन्धम	द. ७	पुनदान	७ १२२३०	अग्निपूजेतिमंत्रः	अश्व	५	यत्नलाभ	२	अथ चलाविस्ताराः
ज्येष्ठा	ज्येष्ठाकु.	शुभम्	वैश्यः	ल. लि.	तिथ्यं	२४	गन्धम	द. ७	पुनदान	७ १२२३०	अग्निपूजेतिमंत्रः	मध्य	५	यत्नलाभ	२	अथ चलाविस्ताराः
मूल	मूलकु.	शुभम्	वैश्यः	ल. लि.	तिथ्यं	२४	गन्धम	द. ७	पुनदान	७ १२२३०	अग्निपूजेतिमंत्रः	मुलोचन	३	अलाभ	६	अथ चलाविस्ताराः
पूर्वाषाढा	पूर्वाषाढाकु.	शुभम्	वैश्यः	ल. लि.	तिथ्यं	२४	गन्धम	द. ७	पुनदान	७ १२२३०	अग्निपूजेतिमंत्रः	अश्व	५	यत्नलाभ	२	अथ चलाविस्ताराः
उ. पा.	उ. पा.कु.	शुभम्	वैश्यः	ल. लि.	तिथ्यं	२४	गन्धम	द. ७	पुनदान	७ १२२३०	अग्निपूजेतिमंत्रः	मध्य	५	यत्नलाभ	२	अथ चलाविस्ताराः
पूर्वाषाढा	पूर्वाषाढाकु.	शुभम्	वैश्यः	ल. लि.	तिथ्यं	२४	गन्धम	द. ७	पुनदान	७ १२२३०	अग्निपूजेतिमंत्रः	मुलोचन	३	अलाभ	६	अथ चलाविस्ताराः
ज्येष्ठा	ज्येष्ठाकु.	शुभम्	वैश्यः	ल. लि.	तिथ्यं	२४	गन्धम	द. ७	पुनदान	७ १२२३०	अग्निपूजेतिमंत्रः	अश्व	५	यत्नलाभ	२	अथ चलाविस्ताराः
मूल	मूलकु.	शुभम्	वैश्यः	ल. लि.	तिथ्यं	२४	गन्धम	द. ७	पुनदान	७ १२२३०	अग्निपूजेतिमंत्रः	मध्य	५	यत्नलाभ	२	अथ चलाविस्ताराः
पूर्वाषाढा	पूर्वाषाढाकु.	शुभम्	वैश्यः	ल. लि.	तिथ्यं	२४	गन्धम	द. ७	पुनदान	७ १२२३०	अग्निपूजेतिमंत्रः	मुलोचन	३	अलाभ	६	अथ चलाविस्ताराः
उ. पा.	उ. पा.कु.	शुभम्	वैश्यः	ल. लि.	तिथ्यं	२४	गन्धम	द. ७	पुनदान	७ १२२३०	अग्निपूजेतिमंत्रः	अश्व	५	यत्नलाभ	२	अथ चलाविस्ताराः
पूर्वाषाढा	पूर्वाषाढाकु.	शुभम्	वैश्यः	ल. लि.	तिथ्यं	२४	गन्धम	द. ७	पुनदान	७ १२२३०	अग्निपूजेतिमंत्रः	मध्य	५	यत्नलाभ	२	अथ चलाविस्ताराः
ज्येष्ठा	ज्येष्ठाकु.	शुभम्	वैश्यः	ल. लि.	तिथ्यं	२४	गन्धम	द. ७	पुनदान	७ १२२३०	अग्निपूजेतिमंत्रः	मुलोचन	३	अलाभ	६	अथ चलाविस्ताराः
मूल	मूलकु.	शुभम्	वैश्यः	ल. लि.	तिथ्यं	२४	गन्धम	द. ७	पुनदान	७ १२२३०	अग्निपूजेतिमंत्रः	अश्व	५	यत्नलाभ	२	अथ चलाविस्ताराः
पूर्वाषाढा	पूर्वाषाढाकु.	शुभम्	वैश्यः	ल. लि.	तिथ्यं	२४	गन्धम	द. ७	पुनदान	७ १२२३०	अग्निपूजेतिमंत्रः	मध्य	५	यत्नलाभ	२	अथ चलाविस्ताराः
उ. पा.	उ. पा.कु.	शुभम्	वैश्यः	ल. लि.	तिथ्यं	२४	गन्धम	द. ७	पुनदान	७ १२२३०	अग्निपूजेतिमंत्रः	मुलोचन	३	अलाभ	६	अथ चलाविस्ताराः
पूर्वाषाढा	पूर्वाषाढाकु.	शुभम्	वैश्यः	ल. लि.	तिथ्यं	२४	गन्धम	द. ७	पुनदान	७ १२२३०	अग्निपूजेतिमंत्रः	अश्व	५	यत्नलाभ	२	अथ चलाविस्ताराः
ज्येष्ठा	ज्येष्ठाकु.	शुभम्	वैश्यः	ल. लि.	तिथ्यं	२४	गन्धम	द. ७	पुनदान	७ १२२३०	अग्निपूजेतिमंत्रः	मध्य	५	यत्नलाभ	२	अथ चलाविस्ताराः
मूल	मूलकु.	शुभम्	वैश्यः	ल. लि.	तिथ्यं	२४	गन्धम	द. ७	पुनदान	७ १२२३०	अग्निपूजेतिमंत्रः	मुलोचन	३	अलाभ	६	अथ चलाविस्ताराः
पूर्वाषाढा	पूर्वाषाढाकु.	शुभम्	वैश्यः	ल. लि.	तिथ्यं	२४	गन्धम	द. ७	पुनदान	७ १२२३०	अग्निपूजेतिमंत्रः	अश्व	५	यत्नलाभ	२	अथ चलाविस्ताराः
उ. पा.	उ. पा.कु.	शुभम्	वैश्यः	ल. लि.	तिथ्यं	२४	गन्धम	द. ७	पुनदान	७ १२२३०	अग्निपूजेतिमंत्रः	मध्य	५	यत्नलाभ	२	अथ चलाविस्ताराः
पूर्वाषाढा	पूर्वाषाढाकु.	शुभम्	वैश्यः	ल. लि.	तिथ्यं	२४	गन्धम	द. ७	पुनदान	७ १२२३०	अग्निपूजेतिमंत्रः	मुलोचन	३	अलाभ	६	अथ चलाविस्ताराः
ज्येष्ठा	ज्येष्ठाकु.	शुभम्	वैश्यः	ल. लि.	तिथ्यं	२४	गन्धम	द. ७	पुनदान	७ १२२३०	अग्निपूजेतिमंत्रः	अश्व	५	यत्नलाभ	२	अथ चलाविस्ताराः
मूल	मूलकु.	शुभम्	वैश्यः	ल. लि.	तिथ्यं	२४	गन्धम	द. ७	पुनदान	७ १२२३०	अग्निपूजेतिमंत्रः	मध्य	५	यत्नलाभ	२	अथ चलाविस्ताराः
पूर्वाषाढा	पूर्वाषाढाकु.	शुभम्	वैश्यः	ल. लि.	तिथ्यं	२४	गन्धम	द. ७	पुनदान	७ १२२३०	अग्निपूजेतिमंत्रः	मुलोचन	३	अलाभ	६	अथ चलाविस्ताराः
उ. पा.	उ. पा.कु.	शुभम्	वैश्यः	ल. लि.	तिथ्यं	२४	गन्धम	द. ७	पुनदान	७ १२२३०	अग्निपूजेतिमंत्रः	अश्व	५	यत्नलाभ	२	अथ चलाविस्ताराः
पूर्वाषाढा	पूर्वाषाढाकु.	शुभम्	वैश्यः	ल. लि.	तिथ्यं	२४	गन्धम	द. ७	पुनदान	७ १२२३०	अग्निपूजेतिमंत्रः	मध्य	५	यत्नलाभ	२	अथ चलाविस्ताराः
ज्येष्ठा	ज्येष्ठाकु.	शुभम्	वैश्यः	ल. लि.	तिथ्यं	२४	गन्धम	द. ७	पुनदान	७ १२२३०	अग्निपूजेतिमंत्रः	मुलोचन	३	अलाभ	६	अथ चलाविस्ताराः
मूल	मूलकु.	शुभम्	वैश्यः	ल. लि.	तिथ्यं	२४	गन्धम	द. ७	पुनदान	७ १२२३०	अग्निपूजेतिमंत्रः	अश्व	५	यत्नलाभ	२	अथ चलाविस्ताराः
पूर्वाषाढा	पूर्वाषाढाकु.	शुभम्	वैश्यः	ल. लि.	तिथ्यं	२४	गन्धम	द. ७	पुनदान	७ १२२३०	अग्निपूजेतिमंत्रः	मध्य	५	यत्नलाभ	२	अथ चलाविस्ताराः
उ. पा.	उ. पा.कु.	शुभम्	वैश्यः	ल. लि.	तिथ्यं	२४	गन्धम	द. ७	पुनदान	७ १२२३०	अग्निपूजेतिमंत्रः	मुलोचन	३	अलाभ	६	अथ चलाविस्ताराः
पूर्वाषाढा	पूर्वाषाढाकु.	शुभम्	वैश्यः	ल. लि.	तिथ्यं	२४	गन्धम	द. ७	पुनदान	७ १२२३०	अग्निपूजेतिमंत्रः	अश्व	५	यत्नलाभ	२	अथ चलाविस्ताराः
ज्येष्ठा	ज्येष्ठाकु.	शुभम्	वैश्यः	ल. लि.	तिथ्यं	२४	गन्धम	द. ७	पुनदान	७ १२२३०	अग्निपूजेतिमंत्रः	मध्य	५	यत्नलाभ	२	अथ चलाविस्ताराः
मूल	मूलकु.	शुभम्	वैश्यः	ल. लि.	तिथ्यं	२४	गन्धम	द. ७	पुनदान	७ १२२३०	अग्निपूजेतिमंत्रः	मुलोचन	३	अलाभ	६	अथ चलाविस्ताराः
पूर्वाषाढा	पूर्वाषाढाकु.	शुभम्	वैश्यः	ल. लि.	तिथ्यं	२४	गन्धम	द. ७	पुनदान	७ १२२३०	अग्निपूजेतिमंत्रः	अश्व	५	यत्नलाभ	२	अथ चलाविस्ताराः
उ. पा.	उ. पा.कु.	शुभम्	वैश्यः	ल. लि.	तिथ्यं	२४	गन्धम	द. ७	पुनदान	७ १२२३०	अग्निपूजेतिमंत्रः	मध्य	५	यत्नलाभ	२	अथ चलाविस्ताराः
पूर्वाषाढा	पूर्वाषाढाकु.	शुभम्	वैश्यः	ल. लि.	तिथ्यं	२४	गन्धम	द. ७	पुनदान	७ १२२३०	अग्निपूजेतिमंत्रः	मुलोचन	३	अलाभ	६	अथ चलाविस्ताराः
ज्येष्ठा	ज्येष्ठाकु.	शुभम्	वैश्यः	ल. लि.	तिथ्यं	२४	गन्धम	द. ७	पुनदान	७ १२२३०	अग्निपूजेतिमंत्रः	अश्व	५	यत्नलाभ	२	अथ चलाविस्ताराः
मूल	मूलकु.	शुभम्	वैश्यः	ल. लि.	तिथ्यं	२४	गन्धम	द. ७	पुनदान	७ १२२३०	अग्निपूजेतिमंत्रः	मध्य	५	यत्नलाभ	२	अथ चलाविस्ताराः
पूर्वाषाढा	पूर्वाषाढाकु.	शुभम्	वैश्यः	ल. लि.	तिथ्यं	२४	गन्धम	द. ७	पुनदान	७ १२२३०	अग्निपूजेतिमंत्रः	मुलोचन	३	अलाभ	६	अथ चलाविस्ताराः
उ. पा.	उ. पा.कु.	शुभम्	वैश्यः	ल. लि.	तिथ्यं	२४	गन्धम	द. ७	पुनदान	७ १२२३०	अग्निपूजेतिमंत्रः	अश्व	५	यत्नलाभ	२	अथ चलाविस्ताराः
पूर्वाषाढा	पूर्वाषाढाकु.	शुभम्	वैश्यः	ल. लि.	तिथ्यं	२४	गन्धम	द. ७	पुनदान	७ १२२३०	अग्निपूजेतिमंत्रः	मध्य	५	यत्नलाभ	२	अथ चलाविस्ताराः
ज्येष्ठा	ज्येष्ठाकु.	शुभम्	वैश्यः	ल. लि.	तिथ्यं	२४	गन्धम	द. ७	पुनदान	७ १२२३०	अग्निपूजेतिमंत्रः	मुलोचन	३	अलाभ	६	अथ चलाविस्ताराः
मूल	मूलकु.	शुभम्	वैश्यः	ल. लि.	तिथ्यं	२४	गन्धम	द. ७	पुनदान	७ १२२३०	अग्निपूजेतिमंत्रः	अश्व	५	यत्नलाभ	२	अथ चलाविस्ताराः
पूर्वाषाढा	पूर्वाषाढाकु.	शुभम्	वैश्यः	ल. लि.	तिथ्यं	२४	गन्धम	द. ७	पुनदान	७ १२२३०	अग्निपूजेतिमंत्रः	मध्य	५	यत्नलाभ	२	अथ चलाविस्ताराः
उ. पा.	उ. पा.कु.	शुभम्	वैश्यः	ल. लि.	तिथ्यं	२४	गन्धम	द. ७	पुनदान	७ १२२३०	अग्निपूजेतिमंत्रः	मुलोचन	३	अलाभ	६	अथ चलाविस्ताराः
पूर्वाषाढा	पूर्वाषाढाकु.	शुभम्	वैश्यः	ल. लि.	तिथ्यं	२४	गन्धम	द. ७	पुनदान	७ १२२३०	अग्निपूजेतिमंत्रः	अश्व	५	यत्नलाभ	२	अथ चलाविस्ताराः
ज्येष्ठा	ज्येष्ठाकु.	शुभम्	वैश्यः	ल. लि.	तिथ्यं	२४	गन्धम	द. ७	पुनदान	७ १२२३०	अग्निपूजेतिमंत्रः	मध्य	५	यत्नलाभ	२	अथ चलाविस्ताराः
मूल	मूलकु.	शुभम्	वैश्यः	ल. लि.	तिथ्यं	२४	गन्धम	द. ७	पुनदान	७ १२२३०	अग्निपूजेतिमंत्रः	मुलोचन	३	अलाभ	६	अथ चलाविस्ताराः
पूर्वाषाढा	पूर्वाषाढाकु.	शुभम्	वैश्यः	ल. लि.	तिथ्यं	२४	गन्धम	द. ७	पुनदान	७ १२२३०	अग्निपूजेतिमंत्रः	अश्व	५	यत्नलाभ	२	अथ चलाविस्ताराः
उ. पा.	उ. पा.कु.	शुभम्	वैश्यः	ल. लि.	तिथ्यं	२४	गन्धम	द. ७	पुनदान	७ १२२३०	अग्निपूजेतिमंत्रः	मध्य	५	यत्नलाभ	२	अथ चलाविस्ताराः
पूर्वाषाढा	पूर्वाषाढाकु.	शुभम्	वैश्यः	ल. लि.	तिथ्यं	२४	गन्धम	द. ७	पुनदान	७ १२२३०	अग्निपूजेतिमंत्रः	मुलोचन	३	अलाभ	६	अथ चलाविस्ताराः
ज्येष्ठा	ज्येष्ठाकु.	शुभम्	वैश्यः	ल. लि.	तिथ्यं	२४	गन्धम	द. ७	पुनदान	७ १२२३०	अग्निपूजेतिमंत्रः	अश्व	५	यत्नलाभ	२	अथ चलाविस्ताराः
मूल	मूलकु.	शुभम्	वैश्यः	ल. लि.	तिथ्यं	२४	गन्धम	द. ७	पुनदान	७ १२२३०	अग्निपूजेतिमंत्रः	मध्य				